साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

30/-

अगस्त 2023
विक्रम संवत् 2080

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

विजेत्री च नः संहता कार्यशक्तिर्
विधायास्य धर्मस्य संरक्षणम् ।
परं वैभवं नेतुमेतत् स्वराष्ट्रं
समर्था भवत्वाशिषा ते भृशम् ॥

आपकी असीम कृपा से हमारी यह विजयशालिनी संगठित कार्यशक्ति
हमारे धर्म का संरक्षण कर इस राष्ट्र को परम वैभव पर ले जाने में समर्थ हो

राजलक्ष्मी समविद गुरुकुलम्
सैनिक स्कूल

वारियाँ, नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश)

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

के पावन मार्गदर्शन में

भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा मान्यता प्राप्त एवं
सी.बी.एस.ई. पाठ्यक्रम आधारित

हम बच्चों के अन्दर का विजेता निखारते हैं

स्कूल की विशेषताएँ

- भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय द्वारा अनुमोदित सैनिक स्कूल
- सुरम्य प्राकृतिक वातावरण में छात्रों हेतु सुन्दर, सुखद, सुविधापूर्ण एवं सुरक्षित आवासीय व्यवस्था
- स्मार्ट क्लासेस, अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं में अध्ययन सहित सैन्य प्रशिक्षण
- निशाने बाजी, बाधारोहण, बेडमिंटन, बास्केटबाल, वालीबाल, टेबल टेनिस, घुड़सवारी एवं मार्शल आर्ट का प्रशिक्षण
- पौष्टिक भोजन हेतु आधुनिक रसोईघर की व्यवस्था
- डॉक्टर एवं नर्स सहित चौबीसों घंटे डिस्पेंसरी सुविधा

प्रवेश संबंधी जानकारी के लिए सम्पर्क करें

ग्राम–वारियाँ, तहसील–नालागढ़, जिला– सोलन (हिमाचल प्रदेश)
+91 9412777152 +91 9999971714 **email :** admissions@vatsalyagram.org
Website : www.samvidgurukulam.org **facebook :** samvidgurukulam

त्रिजन्मपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्
अखण्डै बिल्वपत्रैश्च पूजये शिवशंकरम्
कोटिकन्या महादानं बिल्व पत्रं शिवार्पणम्
दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनम् पापनाशनम्

साधना और सेवा का संगम
वात्सल्य निर्झर
वर्ष 22, अंक 7, अगस्त 2023

मुख्य संरक्षक
परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज
संरक्षक
परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी
प्रधान सम्पादक
संजय गुप्ता
प्रकाशक
परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता
सम्पादकीय मण्डल
देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय
वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली -110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ईमेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org
शाखा कार्यालय
वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग, पोस्ट-वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए ओमवीर सिंह,
परमानन्द ऑफसेट, 1/2080, रामनगर,
शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित एवं परमशक्ति पीठ,
लव-103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा
परमशक्ति पीठ

अनुक्रमणिका

06 धर्म और विज्ञान का समन्वय ही...
08 आत्मानन्द
10 विराट हिन्दू समाज
12 गुरु पूर्णिमा महोत्सव में धन्य हुए शिष्यगण
18 बाढ़ पीड़ितों को भोजन वितरण
22 बारिश के मौसम में अस्थमा से रहें सावधान
29 धर्म संस्कृति
30 युवाओं के लिए रोजगार मार्गदर्शन

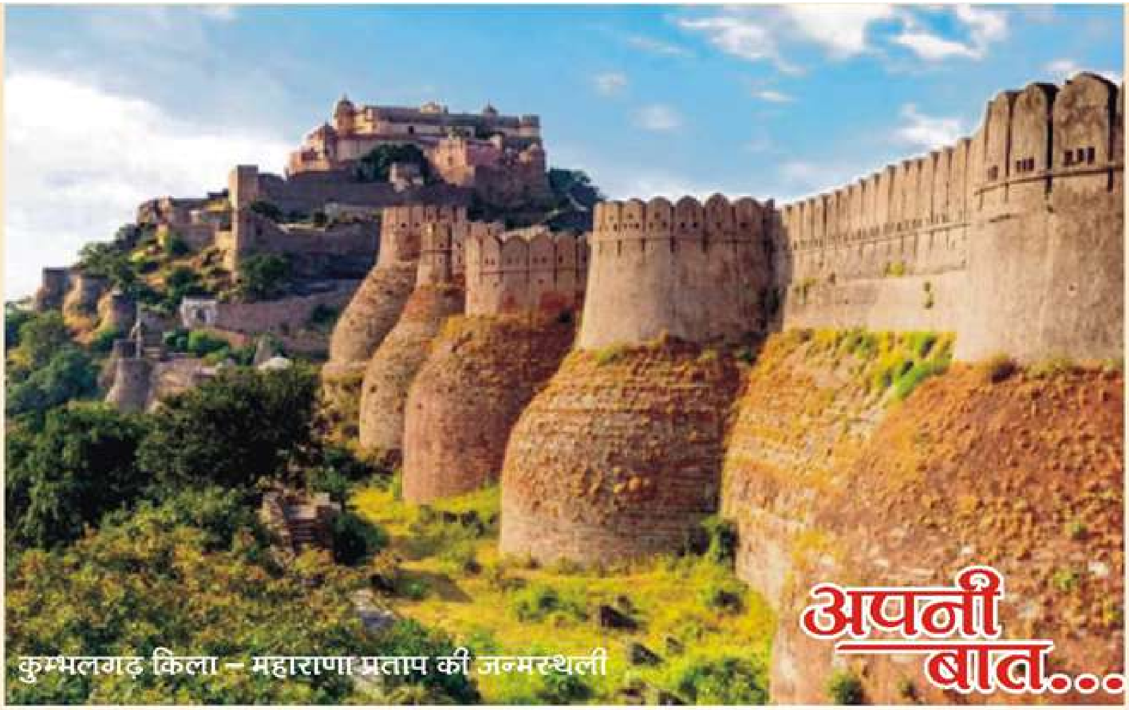

कुम्भलगढ़ किला – महाराणा प्रताप की जन्मस्थली

- देवेन्द्र शुक्ल

वर्ष 2023 हमारी स्वाधीनता के 'अमृत महोत्सव' का साक्षी बन रहा है। हमारी वर्तमान पीढ़ी सौभाग्यशाली है जिसने या तो भारतीय स्वातंत्र्य समर की निर्णायक वेला में जन्म लिया अथवा स्वतंत्र हो चुके भारत में।

'एक हजार वर्षों की दासता के बाद हमें स्वाधीनता मिली' बार-बार बोला जाने वाला ये एक वाक्य मन को चुभता है।

इतिहास के दर्पण में झाँकें तो ईसवी सन 712 में अरबी आक्रान्ता मोहम्मद बिन कासिम द्वारा सिंध पर भीषण आक्रमण और उससे संघर्ष करते हुए राजा दाहिर सेन के बलिदान के साथ ही भारतवर्ष की भूमि पर इस्लाम का प्रवेश दिखाई देता है। इसके बाद मेवाड़ वंश के संस्थापक महापराक्रमी हिन्दू राजा बाप्पा रावल ने गुर्जर प्रतिहार वंश के नागभट्ट एवं दक्षिण भारत के चालुक्य सम्राट जयसिम्हा वर्मन की सहायता से अरबी लुटेरों का भयंकर प्रतिकार करते हुए उन्हें न केवल भारत की सीमा से बाहर खदेड़ा बल्कि ईरान तक पीछा करते हुए उनका समूल नाश भी किया।

ये 'अरबी लुटेरे' केवल भारत की समृद्धि को लूटने या उसका शील भंग करने ही नहीं आए थे बल्कि उनके निशाने पर भारत की वो वैदिक संस्कृति भी थी, जिसने सारे विश्व में 'सोने की चिड़िया' होने का गौरव प्राप्त किया था।

हमारे पराक्रमी पूर्वजों ने सनातन की रक्षा और भारतवर्ष की अखण्डता के लिए सदा से संघर्ष किया है। यदि ये सब न हुआ होता तो इस्लाम की बर्बरता तले आज हम भी मध्य पूर्व एशिया, ईरान, मैसोपोटैमिया से लेकर पूर्वी यूरोप जैसे अपने धर्म और संस्कृति को खो चुके होते।

वर्ष 712 में भारत पर हुए मोहम्मद बिन कासिम के पहले 'इस्लामिक आक्रमण' से लेकर वर्ष 1947 में राजनैतिक स्वाधीनता मिलने तक हम गुलाम नहीं रहे बल्कि हमारे पुरखों ने इन 1235 वर्षों में अपनी स्वाधीनता की रक्षा के लिए भीषण संघर्ष किया है। 'अहिंसा के दम पर हमें आजादी मिली' इस वाक्य का प्रयोग हमारे पराक्रमी पूर्वजों के बलिदानों को धूमिल करने जैसा है।

दुर्भाग्य ये रहा कि भारत को राजनैतिक आजादी मिलने से पहले के इस लम्बे कालखण्ड के इतिहास को बिलकुल उलटकर रख दिया गया। ये भारत छोड़कर भाग रहे ब्रिटिश शासन का कुत्सित प्रयत्न था ताकि भारत की भावी पीढ़ियाँ अपने पराक्रमी इतिहास से अनभिज्ञ हो जाएं। यह एक अकाट्य सत्य है कि कोई राष्ट्र जब अपने शौर्यपूर्ण इतिहास को विस्मृत करता है तभी से उसकी अधोगति का प्रारंभ होता है। आजादी के इस अमृतकाल में हमें अपने उन महापुरुषों का स्मरण करना चाहिए, जिनकी तलवारों ने भारतवर्ष के शत्रुओं का निरन्तर दमन किया।

'हम एक हजार वर्षों तक गुलाम रहे' ये विचार जानबूझकर फैलाया गया। सूत कातकर आजादी नहीं मिलती, उसके लिए रण प्रांगण में शत्रुओं के मस्तक काटने पड़ते हैं। आजादी के इस अमृतकाल में स्मरण रखिए कि 'कासिम' अभी भी जीवित है 'कट्टरपंथ' के रूप में। वो एक फन कुचले हुए नाग जैसा है। समृद्धि के उत्सव में हम जैसे ही युद्ध को विस्मृत करेंगे, तैसे ही वो फिर से एक आंधी के समान सनातन संस्कृति को लीलने के लिए फिर से दौड़ पड़ेगा। कहा भी गया है कि 'युद्ध की तैयारी ही शांति का आधार है।'

धर्म और विज्ञान का समन्वय ही जीवन का उद्धार

- युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

भौतिक कमी की पूर्ति पदार्थों से ही हो सकती है। जो लोग आन्तरिक कमी की पूर्ति बाह्य पदार्थों से और बाह्य आवश्यकताओं की पूर्ति केवल आत्मस्मृति से करना चाहते हैं, वे धोखे में हैं। अध्यात्मवादी आत्मस्मृति के पथ से दुःख को दूर करते हैं किन्तु व्यावहारिक व्यवस्था का ध्यान नहीं रखते। उनके दुःखों की निवृत्ति भले ही हो जाए किन्तु जीवन से कष्ट समाप्त नहीं हो सकते। जो बाह्य पदार्थों का संग्रह करके सुखी होना चाहते हैं, वे आवश्यकताओं की आपूर्ति से पैदा होने वाले कष्टों को भले ही किसी हद तक दूर कर सकें किन्तु चिन्ता और अशान्ति से मुक्त नहीं हो सकते, दुःखों से छुटकारा नहीं पा सकते।

यह भी सम्भव हो सकता है कि पदार्थों का संग्रह करके बाहर से सुख पूर्ति की आशा से अतिभोग, अतिश्रम और अतिसंग्रह, अन्दर और भी अशान्ति व चिन्ता पैदा कर दे, जिससे शरीर ही रोगी हो जाए। इससे दुःख तो मिटेंगे नहीं बल्कि कष्ट की निवृत्ति भी असम्भव हो जाएगी अर्थात् बाहर की ओर दौड़ने वाले व्यक्ति के दुःख और कष्ट, दोनों ही मिटना असम्भव है। इसके विपरीत, जो साधक बाहर से बिल्कुल उपराम हो जाता है, व्यावहारिक व्यवस्था का बिल्कुल ध्यान नहीं रखता, उसका चित्त भी आत्मस्मृति के योग्य नहीं होता क्योंकि जब आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती तो वस्तु की आवश्यकता चित्त में फिरती रहती है। व्यवस्था न होने से आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती। इससे वह इच्छा रहित भी नहीं हो पाता और न आत्मस्मृति में डूब ही पाता है। इसलिए आवश्यकताओं की पूर्ति किये बिना चित्त निःसंकल्प नहीं होता। केवल भौतिकवाद, जो कि बाह्य है और केवल अध्यात्मवाद, जो कि आन्तरिक है, दोनों एक-दूसरे को छोड़कर सफल नहीं हो सकते। अतः भौतिकवाद और अध्यात्मवाद दोनों का समन्वय आवश्यक है।

धर्म अध्यात्मवाद की ओर ले जाने में सहयोगी है और विज्ञान आवश्यकताओं की पूर्ति में। धर्म विहीन विज्ञान, केवल भोग्य पदार्थों की सृष्टि करता है और समाज को भोगी बनाता है। कितना भी विकास करने पर विज्ञान मनुष्य को संतुष्ट नहीं कर पाता बल्कि महत्वाकांक्षा और पदार्थ पाने की होड़ उत्पन्न कर देता है। सामाजिक द्वेष और संघर्ष उत्पन्न होने लगता है। विज्ञान विहीन धर्म, भौतिकवाद की आलोचना करते हुए आवश्यक पदार्थों की कमी के कारण समाज को कष्ट के दलदल में गिराता है। गरीबी, भुखमरी, पदार्थाभाव, ये सब विज्ञान विरोधी धर्म की देन हैं। द्वेष, संघर्ष, लड़ाई, ईर्ष्या, जलन और भौगिक प्रवृत्तियाँ, धर्म विहीन विज्ञान की देन हैं। अतः मानव का उद्धार दोनों के समन्वय में है।

एक-दूसरे के विरोध के नमूने भारत और विदेश हैं। आजकल के साधुओं और गृहस्थों को पूर्णता की उपलब्धि नहीं हुई है। भारत, विदेश के विज्ञान का भूखा है और विदेश भारत के अध्यात्म का भूखा है। गृहस्थ भोगों से

अतृप्त है, शान्ति का भूखा है तथा सामान्य साधु-समाज, अर्थ और आश्रय का भूखा है और इसी को पाने की चिन्ता में निमग्न है। साधुओं में इन्हीं के लिए संघर्ष होते हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से चित्त अंतर्मुख और शान्त नहीं हो पाता। अशान्त और बहिर्मुख चित्त दृढ़ आत्मस्मृति को भी उपलब्ध नहीं होता। अतः पदार्थाभाव में आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से आध्यात्मिक साधन भी असम्भव हो जाते हैं और चित्त पदार्थों की तरफ गतिमान होने लगता हैं धर्म के अभाव में चित्त, आत्मा, परमात्मा, सत्य, मुक्ति और शान्ति इनके विषय में बिल्कुल ही अपरिचित रह जाता है। इनकी खोज में धार्मिक चित्त ही प्रवृत्त होता है। जो इनकी खोज में साधनरत है, उसी को मैं 'धार्मिक चित्त' कहता हूँ।

धर्म विहीन जीवन बिल्कुल बाह्य हो जाता है। इसका उद्देश्य शरीर-रक्षा, भोग-प्राप्ति, महत्वाकांक्षा और अधिकार-रक्षा का रूप ले लेता है। वह कठिन से कठिन श्रम करके भी इन इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता क्योंकि बाह्य पहलू-बाहर की यात्रा, 'क्षितिज' को छूने जैसा प्रयास है जो सदा समीप, पृथ्वी को छूता हुआ और प्राप्य आभासित होता है किन्तु 'क्षितिज' की प्राप्ति कठिन ही नहीं असम्भव है। जैसे मृग तृष्णा का जल दिखता है पर प्राप्त नहीं होता।

धर्म और विज्ञान जब एक-दूसरे के विरोध में होते हैं तब धर्म भी अपने उद्देश्य की पूर्ति में असफल सिद्ध होता है। विज्ञान, जिसका कि उद्देश्य व्यावहारिक व्यवसाय है, वह भी असफल होता है। जीवन की पूर्णता के लिए आत्मानुभूति और शारीरिक व्यवस्था आवश्यक है। शरीर रहते, इनकी व्यवस्था का त्याग सम्भव नहीं। वर्तमान में 'शरीर या संसार नहीं है' ऐसा कोई भी दर्शन स्वीकार नहीं करता, चाहे भले ही उसे व्यावहारिक या प्रातिभासिक कहा जाए।

जिस काल में शरीर का अभाव अनुभव होता है, उस काल में शारीरिक व्यवस्था की भी आवश्यकता नहीं होती। कम-से-कम जगत की स्थिति में किसी भी पहलू से इंकार नहीं किया जा सकता। यदि हम आत्मानुभूति से वंचित रहते हैं तो मरना ही मरना शेष रह जाता है। फिर जगत में कु सार प्रतीत नहीं होता। यह जगत मृग मरीचिका, दुःख का सागर और व्याधि का मन्दिर ही दिखाई देता है। इस संसार का होना बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है। हमारे जीवन की माँग - अमरत्व, आनन्द, शान्ति और अभय की पूर्ति की सम्भावना ही नष्ट हो जाती है। अतः आत्मबोध को त्यागकर, किसी का भी जीवन सरस, सत्य, शिव और सुन्दर नहीं हो सकता। यदि जीवन, जीवन ही न हो, जीवन ही का अभाव प्रतीत होता हो, आनन्द ही न हो तो फिर जीवन है ही क्या? यदि जीवन ही न हो, तो संसार का संग्रह किस काम का होगा? आत्मस्मृति के बिना संसार व्यर्थ सिद्ध होता है।

वर्तमान में दो विचारधाराएँ मानव के चित्त को अपनी ओर आकर्षित करती हैं - एक भौतिकवाद और दूसरी अध्यात्मवाद। कुछ लोगों का चित्त विज्ञान की ओर आकर्षित होता है और वे समझते हैं कि मानव की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान या माँग की पूर्ति विज्ञान ही कर सकता है। दूसरी ओर अध्यात्मवादी विज्ञान का खण्डन करते हुए, उसके दूषित पहलुओं का दर्शन कराते हुए, राष्ट्र हित के लिए अध्यात्मवाद की दुहाई देते हैं।

यही समस्या अर्जुन और भगवान कृष्ण के समय भी आई थी। अर्जुन ने भगवान कृष्ण से पूछा था कि 'कर्म और ज्ञान, इन दोनों में से एक रास्ता मेरे लिए निश्चित करके बताइए।' तब भगवान ने बताया था कि 'ये दो मार्ग नहीं हैं। जो इनको दो मार्ग कहते हैं, वो बच्चे हैं, वे नहीं जानते। कर्म-मार्ग के बिना शरीर निर्वाह भी सिद्ध नहीं हो सकता और आनन्द की सम्भावना ही समाप्त हो जाती है। अतः दोनों का सामंजस्य वर्तमान जीवन में अनिवार्य है।'

शरीर न रहने के बाद, न ज्ञान की आवश्यकता है और न कर्म की। यद्यपि, भगवान ने यह भी स्वीकार किया है कि 'मैंने ज्ञान और कर्म में दो प्रकार की निष्ठाएँ पहले कही हैं' किन्तु ये दो नहीं हैं। एक में कर्म से प्रारम्भ होकर ज्ञान में प्रवेश किया जाता है दूसरे में ज्ञान को उपलब्ध होकर कर्म को स्वीकार किया जाता है, किन्तु आत्मपरिपूर्णता के लिए ये दोनों ही अनिवार्य हैं।

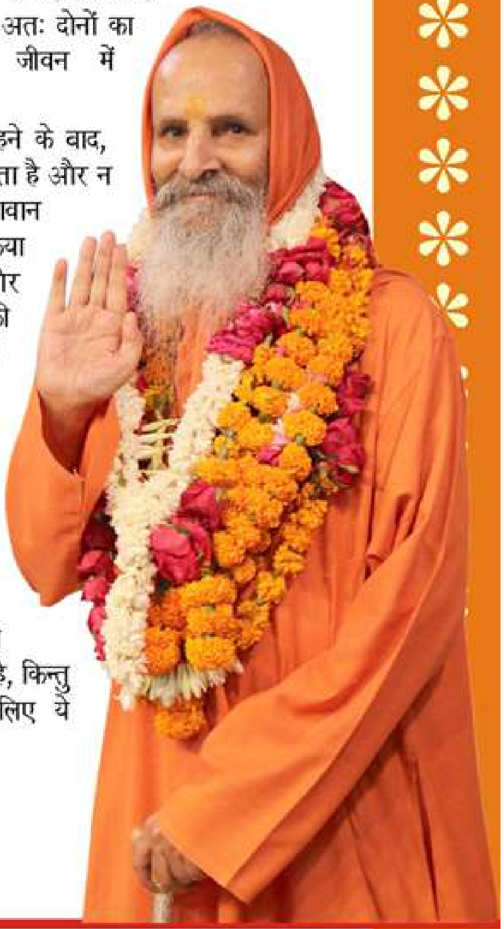

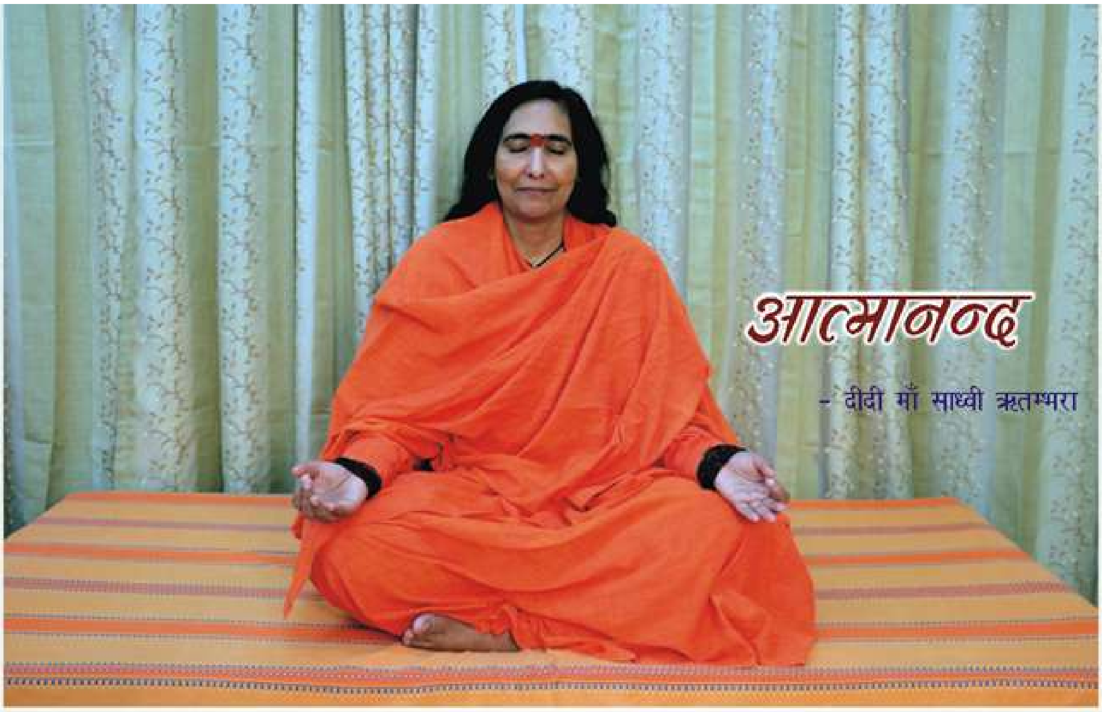

आत्मानन्द

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

बड़ी ही विचित्र है इस जगत की माया। जो हमें नहीं मिल पा रहा, उसके लिए पागल हैं और जो मिल गया फिर उसकी कद्र नहीं। संसार का पहला सुख बाद में निश्चित रूप से दुःख बनकर ही हमारे सामने आता है। आपके सामने जब स्वादिष्ट भोजन हो तो आप खाते जाते हो लेकिन दो घंटे बाद वही भोजन आपको असहनीय पीड़ा देने लगता है।

आपको दूर के लोग परेशान नहीं करते, आपके अपने नज़दीकी ही आपको पीड़ा पहुँचाते हैं। जिससे आपको सुख पाने की अपेक्षा है, वही आपको दुखी करता है लेकिन जिससे सुख की अपेक्षा नहीं, वो आपको दुखी नहीं कर सकता। हम तभी दुखी होते हैं जब हम किसी के प्रति अपेक्षा से भरते हैं। जब सामने वाला मेरे प्यार को कुछ नहीं समझता, तो मैं उसको क्यों प्यार करूँ? ऐसा मन में क्यों आता है? क्योंकि सामने वाले की तरफ से उस प्रकार प्यार का प्रवाह आता दिखाई नहीं दिया। लेकिन यह एक तरफा भी होना चाहिए, क्योंकि प्यार करना एक सुन्दर गुण है। सबको इज्जत देना एक सुन्दर स्वभाव है।

यदि कोई आपकी उपेक्षा कर रहा हो तब भी आप उसको प्यार करो क्योंकि किसी की उपेक्षा से प्रभावित होकर अपने सुन्दर स्वभाव को नहीं छोड़ना चाहिए। गुलाब का फूल तो काँटों के बीच भी खिला रहता है ना? कभी वो ये कहे कि मैं क्यों इतने काँटों की चुभन के बीच रहूँ, मैं भी क्यों ना काँटा ही बन जाऊँ? क्या उसे अपना सुन्दर रूप केवल इसलिए छोड़ देना चाहिए कि उसके चारों ओर काँटे हैं? नहीं, उपेक्षाओं और प्रतिकूलताओं के बीच भी आपके व्यक्तित्व में जितनी रवानी होगी, आप भीतर से उतने ही खिलोगे। जल की तरह आपके चित्त का निर्मल प्रवाह आपको शुचिता और पवित्रता से भरता है। जैसे जल का रुक जाना उसमें सड़ांध पैदा कर देता है। उसका निरन्तर बहते रहना ही उसकी पवित्रता है। मैंने सारी दुनिया को जब देखा तो उसकी तुलना भारत से की। देखा कि हमारे देश में आमतौर पर एक व्यक्ति चालीस वर्ष की आयु आते-आते थकने लगता है लेकिन यूरोप या अमेरिका में लोग नब्बे साल तक उत्साह और उमंग से भरे रहते हैं। हम भारतीय क्यों थकने लगते हैं? क्या हम हताशा से भरे हैं या फिर समाज के द्वारा दी गई व्यवस्थाओं ने हमें अपने बन्धन में जकड़ रखा है? कौनसी वो धारणाएँ हैं जिन्होंने हमारे पैरों में हताशा और निराशा की बेड़ियाँ डाल रखी हैं? क्या कारण है कि हममें से औसत भारतीयों के प्राणों को पंख नहीं लग पाते? जबकि यदि पूरे विश्व में आध्यात्मिक विरासत यदि किसी के पास है तो वो किसके पास है?

हम भारतीय दावा करते हैं कि वो हमारे पास है। हमारे पास राम-कृष्ण हैं, महावीर हैं, बुद्ध हैं, नानक हैं, मीरा हैं, सूरदास हैं, रसखान हैं, तुलसी हैं, कबीर हैं। हमारे पास गोपांगनाओं का संगीत है, मीरा का समर्पण और राधा की निष्ठा है। आत्मानन्द की कितनी अद्भुत विरासत हमारी झोली में और फिर भी हम हताश, थके हुए! क्यों? हो सकता है कि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ उस सुख से परिचित ना हो पाएँ, आज जिसका आनन्द हम लोग अनुभव करते हैं। हमें

नहीं पता कि मीराबाई कैसी थीं, लेकिन उनका स्मरण करते ही हमारा चित्त भक्ति में झूमने लगता है। हम भाग्यशाली हैं कि इन सब महापुरुषों के देवत्व का थोड़ा सा सौंधापन, उसकी थोड़ी सी खुशबू हमारे पास है। क्या वो हमारी आने वाली पीढ़ियों के पास होगी? यही सब सोच-विचारकर मैंने अपने अमेरिका प्रवास पर वहाँ के एक स्थानीय निवासी से बात की। वो पचहत्तर वर्ष के व्यक्ति मुझसे सौ वर्ष तक जीने का आशीर्वाद माँग रहे थे। मैंने आश्चर्य से पूछा कि 'भाई सौ वर्ष तक जीकर क्या करोगे?' उन्होंने कहा कि 'मुझे पिज्जा खाने और कोक पीने का बड़ा शौक है। बस बचे हुए पच्चीस सालों तक उसी का आनन्द लूँगा।

मैं यह सुनकर हैरान रह गई कि भौतिकता में डूबी यह चित्तवृत्ति कितनी गहरी आसक्ति में जकड़ी हुई है! हमारे भारत में तो चालीस साल के बाद ही जीवन की असारता का भान होने लगता है। व्यक्ति को लगने लगता है कि जो दिखाई दे रहा है, केवल यही सच नहीं है बल्कि मुझे सच का खोजी बनना है। इसीलिए वह अन्तर्मुखी होने लगता है। जब मैंने भी ये अन्तर समझा भारत और शेष विश्व में तो लगा कि मैं अपनी भारतभूमि की मिट्टी को माथे पर धारण कर लूँ क्योंकि उसमें जन्मा हुआ व्यक्ति बहुत जल्दी समझ जाता है कि दृश्यमान जगत सत्य नहीं बल्कि इसके पीछे का 'अविनाशी' तत्व ही सत्य है। लेकिन यदि उस अन्तर्मुखता को सही दिशा नहीं मिलती तो वो वह आनन्द देने की बजाय चित्त को कुण्ठित कर देती है। बस यहीं गड़बड़ हो जाती है। जगत की असारता का भाव जिसे 'वैराग्य' में बदलना था, वो 'नैराश्य' में बदल गया। ऐसा व्यक्ति बाहरी जगत से भी अपने आप को समेट लेता है और भीतर से भी चुप हो जाता है। लेकिन जीवन के इस दोराहे पर यदि कोई जाग्रत महापुरुष मिल जाए तो धारा ही बदल जाती है।

किसी ने हाथ गेह लिया, कहा सुनो सजग किया
चेतना सचेत कर, प्रकाश दीप दे दिया
अहेतुकी कृपा का पूर्ण प्यार देखते रहे
पार में खड़े-खड़े अपार देखते रहे।
नयन ज्योति अंध थी, हृदय की आँख बंद थी
चाह दर्शनों की, किन्तु दिव्य दृष्टि मंद थी
अदूर को अदृश्य निराधार देखते रहे
पार में खड़े-खड़े अपार देखते रहे।

आपके जीवन में किसी ऐसे व्यक्ति का आगमन होना चाहिए जो स्वयं जागा हुआ हो और जो हमारे बुझते दीप को स्वयं लौ बनकर नवजीवन दे सके। फिर आप देखेंगे कि कैसे नैराश्य का अंधकार समाप्त होकर जीवन में परमानन्द का सूर्योदय होता है। इसीलिए मानव जीवन मिलना और वह भी भारतभूमि पर एक परम सौभाग्य है क्योंकि यहीं पर जीवन में बहुत जल्दी ही परमसत्ता से मिलने का सुअवसर प्राप्त होता है।

मुझे स्मरण आया कि एक बार हम अमेरिका प्रवास के दौरान मियामी पहुँचे। साथी संगीत मंडली से मैंने कहा कि आप सब ब्रह्म मुहूर्त में अपने-अपने वाद्य यंत्रों के साथ तैयार हो जाना, हम सब यहाँ के समुद्र तट पर चलेंगे। वहाँ तारों की छाँव में बैठकर प्रभु का संकीर्तन करेंगे, नृत्य करेंगे। रात्रि तीन बजे ही सब तैयार हो गए। हमारी कल्पना थी कि जैसे हमारे देश में सागर के तटों पर भगवान जगन्नाथ भगवान, रामेश्वरम् भगवान, द्वारिकाधीश भगवान और सोमनाथ भगवान विराजमान रहते हैं। किसी पर्वत का स्मरण करो तो माता वैष्णो देवी, माँ ज्वाला देवी, माँ मंसा देवी की छवि चित्त में आती है। भले ही मियामी के उस तट पर देव प्रतिमा नहीं होगी लेकिन हम आँखें बन्द करके भावलोक में ही देवालय की निर्मिती कर लेंगे। हम पूरी मंडली के साथ सागर तट पर पहुँचे तो वहाँ का दृश्य देखकर हैरान रह गए। जिस समय हमारे देश में मंदिरों से घंटे-घडियालों की मधुर स्वर लहरियों के बीच प्रार्थनाओं के स्वर मुखरित होते हैं, मियामी के उस तट पर वासनाओं का नंग-नाच मचा हुआ था। स्त्री-पुरुष बेशर्मी के साथ परस्पर आलिंगनबद्ध थे। हम गए तो थे वहाँ भजन करने लेकिन एक क्षण भी रुक ना सके। वापिस लौट आए।

विचार करते रहे कि आखिर क्या है भारत के पास, जो वहाँ प्रभात की वेला में ऐसे भद्दे दृश्य देखने को नहीं मिलते? वह है पवित्रता। लेकिन हम यह भी सोचते रहे कि यदि पश्चिम को पवित्रता मिल जाए और पूरब को स्वच्छता, तो सच में ये विश्व कितना सुन्दर हो जाए। फिर स्वर्ग धरती पर ही उतर आए। लेकिन शर्त यह कि 'पवित्रता और स्वच्छता' दोनों का मिलन हो। इसके लिए हमें भीतर और बाहर एक साथ शुचिता पैदा करनी होगी। इसे ढूँढने के लिए हमें कहीं बाहर भटकने की आवश्यकता नहीं है। हमारे ऋषि-मुनि और महापुरुष आध्यात्मिक सुविचारों के रूप में हमें एक अमूल्य विरासत सौंप गए हैं। आवश्यकता है तो केवल उन्हें अपने आचरण में जीकर आत्मानन्द से भर उठने की।

विराट हिन्दू समाज

- भानुप्रताप शुक्ल

(यह लेख अक्टूबर 1981 में लिखा गया है)

हिन्दू समाज की दशा आज उस भवन की तरह है जिसके खण्डहरों में उसकी कीर्ति-कथा खोजनी पड़ती है। आज उसकी एक-एक ईंट बिखरती जा रही है और कोटि-कोटि हिन्दू जन निरीहभाव से उन ईंटों की नीलामी देख रहे हैं। खण्डहर तो बता रहे हैं कि इमारत बुलन्द थी लेकिन उस खण्डहर के वासी स्वयं अपनी पोषित मानसिकता से मुक्त नहीं हो पा रहे हैं। उन्हें उनका अतीत कभी-कभी उत्तेजित तो करता है लेकिन तब, जब अपमान और अनादर की ठोकर लगती है। उन्हें अपनी अस्मिता का बोध तो होता है लेकिन तब, जब अस्तित्व का संकट समाधान की सीमाएँ पार करने लग जाता है। उसको अपने पूर्वज याद तो आते हैं लेकिन तब, जब पराजय का प्रश्न उत्तर माँगने लगता है। उन्हें आज के अपने खण्डहर के भवन होने की अनुभूति तब होती है, जब कोई उसे वहाँ से भी विस्थापित करके उस पर कब्जा जमाने के लिए आ धमकता है। आज हिन्दू समाज को वे तमाम बातें स्मरण आ रही हैं जो उसे कभी विश्व गुरु के सिंहासन तक ले गई थीं और जिनके कारण आज वह दया का पात्र बनकर असहाय, बीमार और भिखारी के समान अनादृत जीवन-यापन करने के लिए बाध्य हो गया है। आकाश की ऊँचाई को छूने और सागर की गहराईयों को नापने वाला यह समाज अब अपने बलबूते दो कदम भी मनचाही दिशा में नहीं चल पा रहा है। उसकी छवि इतनी बिगाड़ दी गई है कि कभी-कभी उसे स्वयं को भ्रम होने लगता है कि वह कौन है? क्या वो वही है जो लोग कहते हैं या वो वह है जो उसके पूर्वजों ने कहा और बताया था। विराट हिन्दू समाज के सर्वव्यापक और सर्वसमावेशी जीवनोदर्शन को सीमाबद्ध करने की कुटिलताएँ आज सफल होती दिखाई दे रही हैं। यह सब इसलिए, केवल इसलिए है कि आज का

हिन्दू बीमार है। हर बीमार समाज की ऐसी ही स्थिति होती है। उसकी कर्मशक्ति चुक सी जाती है। जब तक यह स्वस्थ नहीं होता उसकी हर बात अनादृत, उसकी हर सोच अस्वीकृत, उसकी हर परम्परा अपमानित होती है। बीमार समाज की स्थापनाओं को कोई कभी स्वीकार नहीं करता। उसका अतीत आनन्दित करने के स्थान पर उसे स्वयं को आतंकित करने लगता है। 'क्या थे, क्या हो गए' की सोच उसे निराशा और हताशा के गहरे गर्त में ढकेल देती है। उसी गहरे गर्त में पड़ा आज का हिन्दू समाज अपनी विराट छवि को अपनी कल्पना पट देखकर परेशान है कि वह इतना लघु, इतना सीमित, इतना क्षुद्र हो गया कि अपनी ही विराटता उसे अब सपना और मखौल सी लगने लगी है।

हिन्दू समाज के भव्य भवन का खण्डहर अपने उत्तराधिकारियों से पूछ रहा है कि उसकी ईंटों की नीलामी कब तक होती रहेगी? कब तुम उसकी पुरानी नींव पर युगानुकूल एक नये और पहले से अधिक भव्य भवन का निर्माण करोगे? कब इन ईंटों के कण-कण में समाहित उज्ज्वल अतीत की प्रतीति तुम्हें होगी? कब आएगा वह शुभ दिन जब हिन्दू मनीषा के समक्ष विश्व नतमस्तक होगा और कब प्राणि मात्र उससे शान्ति और सुख का मंत्र प्राप्त कर अपने जीवन को कृतार्थ करता दिखाई देगा?

इन सवालों का जवाब दिया जाना है, देना पड़ेगा, इसे कोई भी हिन्दू टाल नहीं सकता। वह इस विशिष्ट भूमि पर जिस विशिष्ट जीवन दर्शन का साक्षात्कार करने और जिस विशिष्ट परम्परा के प्रवाह को गतिमान बनाए रखने के लिए जन्मा है, वह महान लक्ष्य उसे उत्तर देने के लिए बाध्य कर रहा है। अब उत्तर देने के दायित्व से बहुत दिन नहीं भागा जा सकता। अब दर्शन और दृष्टि पर ही नहीं बल्कि हिन्दू जीवन की सृष्टि पर भी संकट अत्यन्त गहरा हो उठा है।

हिन्दू समाज सागर की तरह सहज और गहरा है। उसकी सीमाएँ क्षितिज का ओर-छोर नापती हैं। उसमें सभी समाहित हैं। उसकी गरिमा हिमालय सरीखा ऊँचा होने में नहीं है बल्कि उसकी महानता है गहरा और व्यापक होने में। हिमालय की ऊँचाई को छू पाना सर्वसामान्य के लिए सुलभ नहीं। उसको सांगोपांग देख पाना सबकी दृष्टि के लिए संभव नहीं लेकिन सागर की सतह को जहाँ कमजोर से कमजोर व्यक्ति भी छू सकता है, हाथ में जल लेकर आचमन कर सकता है, चाहे तो तट पर बैठकर उसकी लहरों का आनन्द ले सकता है, वहीं सबल और उमंगों वाला व्यक्ति उसकी उत्ताल तरंगों के साथ खेलते हुए उसके अतल-तल की थाह लेकर मोतियों का भण्डार धरती पर ला सकता है। सागर का सानिध्य सभी को प्राप्त होता है। वहाँ वर्जनाएँ नहीं, बाधाएँ नहीं, निषेध नहीं है, अस्वीकृति नहीं है, संताप नहीं है, संत्रास नहीं है, दूरियाँ नहीं हैं, वह सबको सहज भाव से बिना किसी भेदभाव के अपनाता है। सागर का यही चरित्र हिन्दू समाज का चरित्र है। वह आज अपने इस मूल चरित्र से भ्रष्ट हो गया है। उसे उसकी इस मूल धारा में लाने की आवश्यकता है।

इस हिन्दू महोदधि की लहरों का चीत्कार, इसके भव्य भवन की ईंटों से उठती कराहें, उसके परिवेश से उभरते प्रश्नों को सुना है, 'विराट हिन्दू समाज' ने। इस नवगठित संस्था ने हिन्दू समाज और जीवन दर्शन को व्यापकता, विराटता और उसके बहु आयामी रूप को पूर्ण रूप से रूपायित करने का संकल्प किया है। सभी मत-पंथ, सम्प्रदाय, जातियों, उपजातियों के प्रतिनिधि इसमें शामिल हैं। उसकी घोषणा है कि सभी हिन्दू एक हैं, हिन्दू जाति-पंथ-भाषा और क्षेत्र संबंधी कोई भेदभाव नहीं मानता। यह सबको समेटने, सबको गले लगाने और सम्पूर्ण समाज को भावात्मक एकता के सूत्र में पिरोकर हर हिन्दू को हिन्दू समाज के विराट और देवी रूप का दर्शन कराने के लिए कृत संकल्प है। इसका पहला दर्शन होगा आगामी 18 अक्टूबर 1981 को देश की राजधानी दिल्ली में राष्ट्रपति भवन के सामने बोट क्लब पर अपरान्ह दो बजे। लघुरूप जो सचमुच विराट है - साक्षात् परमेश्वर विराट का रूप यह कि वह रूप में ही नहीं बल्कि विचार और व्यवहार में, जीवन और चिन्तन में भी विराट है।

गुरु पूर्णिमा के पावन महोत्सव में धन्य हुए शिष्यगण

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

गुरु पूर्णिमा का पावन महोत्सव विगत 3 जुलाई को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में भक्तिभाव से मनाया गया। इस अवसर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के शिष्यगणों ने उनका पाद पूजन कर उनके प्रति अपनी कृतज्ञता और श्रद्धा को व्यक्त किया। इसके पूर्व 2 जुलाई की संध्या को शिष्यगण उनके अमृतमयी प्रवचनों का श्रवण कर धन्यता को प्राप्त हुए। गुरु पूर्णिमा की प्रातःकाल वात्सल्य ग्राम स्थित 'माँ कलावती पालयम्' के सभागार में वातावरण भावभीना रहा।

पूज्य दीदी माँ जी की वत्सलता के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ प्रदान कीं। इसके पश्चात् दीदी माँ जी ने अपने पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष महामंडलेश्वर अनन्तश्री विभूषित स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज की चरण पादुकाओं का अभिषेक और पूजन किया। तत्पश्चात् पूज्या दीदी माँ जी के संन्यासी शिष्य मंडल एवं देशभर से बड़ी संख्या में पधारे शिष्यगणों ने उनके पावन श्रीचरणों में अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

पूज्या दीदी माँ जी का शिष्यमंडल उनके प्रति अपनी श्रद्धा समर्पित करते हुए

सौभाग्यशाली हैं वो जो गुरुमुखी हैं

- दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

गुरु पूर्णिमा के इस परम महोत्सव में आप सभी गुरु भक्ति के भाव से ओतप्रोत हैं। भारत की यह परम्परा, भारत की यह धार्मिक धारा बड़ी अद्भुत है। ऐसे श्रीचरण जिनके जीवन में हों, तो वो उन चरणों में शीश झुकाकर अपने जीवन की अशांति, क्लेश और एक विकट मानसिक बोझ से मुक्त हो सकता है। हमारे यहाँ गुरु-शिष्य परम्परा बड़ी ही पवित्र मानी गई है। हमें अपनी इस परम्परा से जो प्राप्त है, उसी के वशीभूत गुरु पूर्णिमा का जब उत्सव आता है, तब हमारे हृदय के समर्पण और अर्पण का भाव नृत्य करने लगता है। उमंग से भर जाते हैं हम। ऐसी उमंग जिसमें हमें लगता है कि हम अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें। अभागे हैं वो जो गुरमुख नहीं है परन्तु सौभाग्यशाली हैं वो जो गुरमुखी हैं। जो अपने गुरु की वाणी के वचन को वेदवाक्य समझते हैं। विचार कीजिए कि हमारे उद्धारक कौन? जिनकी वाणी, जिनके वचन, जिनके दर्शन, जिनका सानिध्य और जिनका स्मरण ही हमारे चित्त को निर्मल कर दे, आनन्द से भर दे। गुरु सेतु होते हैं, गुरु मार्ग होते हैं, गुरु पगडंडी होते हैं। गुरु हमें अपने लक्ष्य तक पहुँचाते हैं।

आप देखो तो पाओगे कि जितने भी धर्मग्रंथ हैं उन्होंने सदैव ही 'मोह' पर चोट की है। ये जो मोह है ना, यह एक भयंकर झंझावात है। महाभारत में धृतराष्ट्र कहते हैं कि 'मैं आँखों से तो अंधा हूँ ही, किन्तु मेरी दुर्बलता मेरा मोह है।' आप जब किसी के प्रति मोह से युक्त होते हो, तब उसके दोष आप नहीं देख पाते। आप उसको वर्जना भी नहीं दे पाते। आप उसको कुछ भी करने से रोक नहीं पाते क्योंकि आपको दुर्बल कर दिया आपके मोह ने। इसके विपरीत मोह से मुक्त होना ठीक वैसा ही है जैसे एक भारी बोझ आप अपने सिर पर लादकर किसी पहाड़ी पर चढ़ रहे हो और उसे एकदम से उतारकर फेंक दें। फिर देखो, कैसे उछलते कूदते आप उस पर्वत के शिखर पर आसानी से चढ़ जाओगे।

आप बोझिल हैं। क्यों? समस्याएँ तो सबके जीवन में होती हैं। स्मरण रखना कि परमात्म्य सत्ता स्थिर है और संसार चलायमान। जो स्थिर है उस ईश्वर के प्रति हमारा ध्यान नहीं और जो संसार चलायमन है, उसके मोह से हम ग्रस्त हैं। जो नहीं रहने वाला है, हम उसके मोह में पड़ गए। हम चाहते हैं कि वह अब टिका रहना चाहिए, वह बना रहना चाहिए, अब वह सब हमारे अनुकूल ही रहना चाहिए परन्तु वो तो परिवर्तनशील है। वहाँ निश्चित रूप से बदलाव आएगा। आज आपकी चित्तवृत्ति ऐसी है, कल वैसी होगी और परसों कुछ और होगी। आप कहते हो कि उसने तो वादा किया था कि सात जन्मों तक साथ निभाएंगे परन्तु ये साथ तो मात्र सात वर्षों में ही छूट गया। तो ऐसा क्यों हुआ? जब उसने आपसे वादा किया था, तब उसकी दृष्टि कुछ और थी। अब दृष्टि और प्रवृत्ति दोनों बदल गईं।

किसी भी सांसारिक वृत्ति या स्थिति को देखें, वो निरन्तर परिवर्तनशील है। आप स्वयं को ही देखें। अभी आप प्रसन्नचित्त थे और अभी किसी बात पर आपको रोष आ गया। कुछ देर पहले तक आप करुणा से भरे थे और अभी किसी बात पर क्रोध से तमतमा उठे। वृत्ति और जगत में लगातार परिवर्तन है। हम बड़े संकट में हैं। क्या हैं ये संकट? तृष्णा संकट है, मोह संकट है। हम कभी भी तृष्णाओं से 'इतिश्री' नहीं करते। कभी किसी व्यक्ति को ये नहीं लगता कि अब कुछ भी पाना शेष नहीं रह गया और अब मैं कृतकृत्य हूँ। महाभारत युद्ध के प्रारंभ में अर्जुन मोहग्रस्त था परन्तु भगवान ने जब उसे सम्पूर्ण ज्ञान दिया, तब वह मोहमुक्त होकर युद्ध के लिए तैयार हो गया। इसका अर्थ है कि परिस्थितियाँ हमारा संकट नहीं हैं। केवल मोह है जो हमारे लिए समस्याएँ उत्पन्न करता है। सद्गुरु ही हैं जो हमें इस मोहजाल से मुक्त करते हैं। हम सब बड़े सौभाग्यशाली हैं जो हमें अपने गुरुदेव का पाथेय मोह मार्ग से हटाकर कर्तव्य पथ पर अग्रसर करता है।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की झलकियाँ

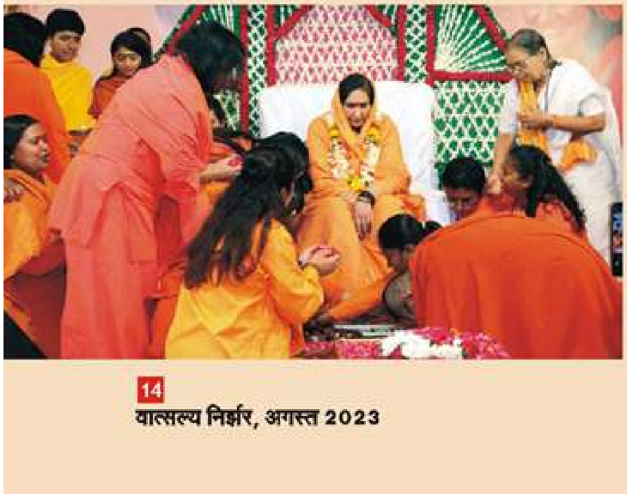

उत्तराखण्ड विधानसभा अध्यक्ष का शुभागमन

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

विगत दिनों वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में उत्तराखण्ड विधानसभा की अध्यक्ष माननीया श्रीमती ऋतु खण्डूरी भूषण का शुभागमन हुआ। इस अवसर पर वात्सल्य परिवार द्वारा आपका भावभीना स्वागत किया गया। आपने पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी का आशीर्वाद प्राप्त करके सम्पूर्ण वात्सल्य ग्राम में संचालित विभिन्न सेवा प्रकल्पों का दर्शन किया। आपने कहा कि 'दीदी माँ जी के पावन नेतृत्व में यहाँ चल रहे सभी सेवा प्रकल्प अद्भुत हैं। वास्तव में ये सच्चा राष्ट्रकार्य है। मैं उनका कोटिशः अभिनन्दन करती हूँ।'

विश्व पटल पर फहरा दो अब झण्डा हिन्दुस्तान का

- डॉ. उमाशंकर 'राही'

आज देश की आजादी का, पर्व मनाता है भारत।
हुए पचहत्तर साल इसी का, गर्व मनाता है भारत।।
क्या खोया क्या पाया अब तक, इसको भी तो जानें हम।
अपने और पराये के भी, अन्तर को पहचानें हम।।
हिन्दू ,मुस्लिम, सिक्ख ,ईसाई, जो भारत के वासी हैं।
भारत की सुख सुविधाओं के, जो अतिशय अभिलाषी हैं।।
अपने घर की मीनारों पर, राष्ट्रध्वजा तिरंगा फहराएँ।
होली, ईद, दिवाली जैसा, आजादी का पर्व मनाएँ।।
हम सब बने उदाहरण अपने, भारत की पहचान का।
विश्वपटल पर फहरा दो अब, झण्डा हिन्दुस्तान का।।

आजदी के बाद खुशी की, कोई कलिका खिली नहीं।
और देश की मूल भावना, को आजादी मिली नहीं।।
पहले दिन ही बँटवारे का, शोर शराबा कर डाला।
भारत के दो टुकड़े करके, खून खराबा कर डाला।।
शत्रु के अत्याचारों के, चिन्ह अभी तक जिन्दा हैं।
जिन्हें देखकर भारतवासी, अब तक भी शर्मिन्दा हैं।।
भग्न खड़े अवशेष आज की, पीढ़ी से यह कहते हैं।
जिसने हमको तोड़ा था वह, इसी देश में रहते हैं।।
इन सबको पैगाम शीघ्र दो, भारत से प्रस्थान का।
विश्वपटल पर फहरा दो अब, झण्डा हिन्दुस्तान का।।

गांधीजी अनशन पर बैठे, चली गोलियाँ लाठी खाईं।
जलियांवाला बाग ही देखो, जहाँ हजारों जान गवाईं।।
गांधीजी के साथ शेर भी, गीदड़ बनकर रहते थे।
अंग्रेजी अत्याचारों को, मन मसोसकर सहते थे।।
सहते-सहते अति हुई तो, फूट पड़ी क्रांति ज्वाला।
चन्द्रशेखर आजाद, भगत ने, खींच दिया अपना पाला।।
गोरों के अब जुल्म किसी, भारतवासी पर होते थे।
अगले दिन अंग्रेजी अफसर, चिरनिद्रा में सोते थे।।
नगर-नगर स्वर गूंज उठा था ,वन्देमातरम् गान का।
विश्वपटल पर फहरा दो अब, झण्डा हिन्दुस्तान का।।

नंगे बदन पड़े थे चाबुक, किन्तु नहीं हिम्मत हारी।
पहले से भी अधिक शुरू हुई, संघर्षों की तैयारी।।
कोल्हू खींचा तेल निकाला, कन्धों पर पड़ गये छाले।
खाने को भी खल मिलती थी, वो भी केवल चंद निवाले।।
दो जन्मों की सजा हुई थी, जिनको काला पानी की।
सावरकर ने याद दिला दी, अंग्रेजों को नानी की।।
रोशन, बिस्मिल, अशफाक उल्ला, और सुभाष से बलिदानी।
भारत माँ को मुक्त कराने, वाले थे ये सेनानी।।
पहले भारतवर्ष बनाओ, इन सबके अरमान का।
विश्वपटल पर फहरा दो, अब झण्डा हिन्दुस्तान का।।

वर्ष शताब्दी रामराज्य की, अब से ही तैयारी हो।
अमन चैन से रहें सभी जन, अब न कोई बमबारी हो।।
सीमाएँ सब रहें सुरक्षित, उग्रवाद का डर न हो।
खुशहाली का रंग उड़े अब, भय पीड़ित कोई घर न हो।।
अब न मिले किसी को माफी, सेना से बदमाशी की।
देशद्रोह की सजा सुनिश्चित, की जाए अब फाँसी की ।।
कोई पड़ोसी लांघ सके न, भारत की सीमाओं को।
अब न बेटे पड़ें गवाँने, भारत की इन माँओं को।।
हमको कर्ज चुकाना होगा, वीरों के बलिदान का।
विश्वपटल पर फहरा दो अब ,झण्डा हिन्दुस्तान का।।

समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल छात्राओं द्वारा

बाढ़ पीड़ितों को भोजन वितरण

वृन्दावन

विगत जुलाई महीने में हुई वर्षा ने यमुना नदी को खतरे के निशान से ऊपर बहा दिया। दिल्ली से लेकर मथुरा तक के सारे किनारे इसकी चपेट में आए। कई वर्षों के बाद वृन्दावन परिक्रमा को पार करते हुए यमुना मैया की अथाह जलराशि ने अकल्पनीय दृश्य उत्पन्न किया। यहाँ रहने वाले लोग बड़ी संख्या में प्रभावित हुए। कईयों के घर और गृहस्थी का सामान तक बाढ़ ने निगल लिया। सैकड़ों लोगों को नदी के किनारों से सुरक्षित स्थानों पर विस्थापित किया गया। स्थानीय प्रशासन के प्रयत्नों के साथ ही वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित 'समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल परिवार ने भी इन बाढ़ पीड़ितों की सहायता के लिए कमर कसी। पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की पावन प्रेरणा पाकर निश्चित किया गया कि सम्पूर्ण वृन्दावन में बाढ़ से प्रभावित लोगों तक भोजन पैकेट पहुँचाए जाएंगे। स्कूल की भोजनशाला में कर्मचारियों के साथ छात्राओं ने भी अपने योगदान से भोजन तैयार करके उनके पैकेट्स बनाए। स्कूल बस के द्वारा अपनी शिक्षिकाओं के मार्गदर्शन में छात्राओं ने प्रभावित क्षेत्रों में लोगों को भोजन पैकेट्स एवं पानी की बोतलें वितरित कीं। सभी चित्र उसी अवसर के।

SAMVID GURUKULAM SR.

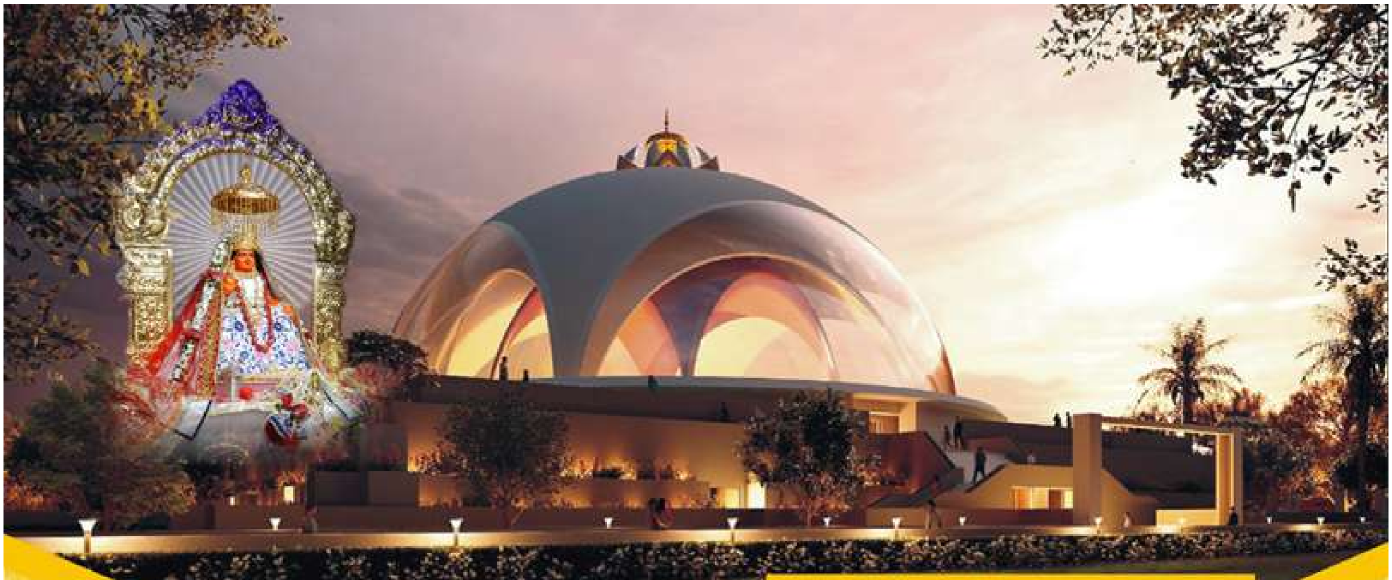

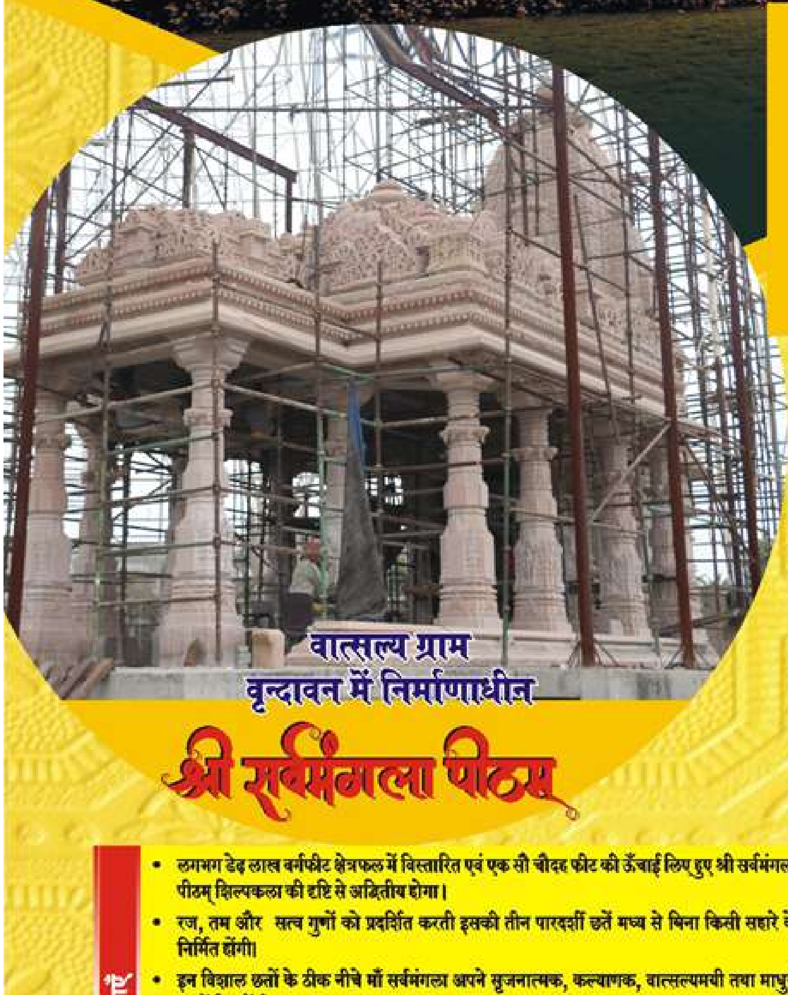

वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रूप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईंट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425
IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

कन्यादान

आह्वान

सौभाग्यशाली होते हैं वो वर और वधु जो सन्त शक्तियों के आशीर्वादों की छत्रछाया में दाम्पत्य जीवन की डोर से बँधते हैं। परमपिता परमेश्वर की इसी असीम अनुकम्पा की पात्र बन रही हैं, वात्सल्य परिवार की बेटियाँ। उनको आध्यात्मिक शक्तियों के सानिध्य में समाज के प्रतिष्ठित परिवारों की बहू बनते देखना अतीव आनन्द के क्षण होते हैं। परमशक्ति पीठ के माध्यम से हम उनके घर बसाने की पुण्य कार्य में संलग्न हैं। आप भी इस कार्य में उनके कन्यादान के सहभागी बनकर सामाजिक योगदान प्रदान कर सकते हैं।

साध्वी ऋतम्भरा

सहयोग हेतु सम्पर्क करें
परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
दूरभाष : 9999971714, 9999971716

आप अपना सहयोग सीधे बैंक में भी जमा करा सकते हैं, जिसके लिए हमारे खाते की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है :

A/c Name : Param Shakti Peeth A/c Kanyadan
A/c No. : 6023000100098186
IFSC Code : PUNB0602300
Branch Name : Mandawali, Delhi

बारिश के मौसम में अस्थमा से रहें सावधान

बारिश के मौसम के साथ ही 'अस्थमा' की समस्या भी बढ़ने लगती है। पिछले वर्ष 'आई लंग इंडिया जर्नल' की रिपोर्ट के अनुसार देश में लगभग 3.43 करोड़ लोग अस्थमा से पीड़ित हैं। इससे हर साल लगभग 1.98 होते लाख मौतें होती हैं। अस्थमा श्वसन प्रणाली से संबंधित एक ऐसी बीमारी है जिसमें पीड़ित को साँस लेने में दिक्कत होती है। खाँसी आती है। कफ निकलता है। यह एक जेनेटिक टेंडेंसी है यानी यदि परिवार में अस्थमा का इतिहास रहा है तो इसकी आशंका काफी बढ़ जाती है। बच्चों को सर्दी खाँसी के दौरान यदि साँस लेने से जुड़ी समस्या हो तो इसे गंभीरता से लें। उचित इलाज द्वारा अस्थमा को पूरी तरह से नियंत्रित किया जा सकता है। इसके अधिकांश पीड़ित बिना किसी बाधा के अपने सारे दैनिक काम कर सकते हैं।

अस्थमा एक तरह की एलर्जी है जिसमें वायु नलिकाएँ (ब्रांकाई) अत्यधिक संवेदनशील हो जाती हैं। यह एलर्जी परागकणों, धूल, जानवरों के बाल, गंध, धुआँ अथवा खाने के वस्तुओं से भी हो सकती है। इससे पीड़ित व्यक्ति की वायु नलिका सिकुड़ जाती हैं जिससे साँस लेने में घरघराहट, सीने में जकड़न और साँस फूलने जैसी समस्याएँ होती हैं। रात के समय या सुबह खाँसी अधिक आती है। खाँसी के बाद उल्टी आना गंभीर अस्थमा का संकेत है।

अस्थमा किसी की उम्र में हो सकता है लेकिन आमतौर पर इसकी शुरुआत बचपन में होती है। जिन बच्चों में एलर्जी की प्रवृत्ति होती है, उनमें क्रमिक रूप से एलर्जी के लक्षण दिखाई देते हैं। इसे 'एलर्जी मार्च' कहा जाता है। भोजन के प्रति एलर्जी आमतौर पर सबसे पहले दिखाई देती है, जैसे दूध पीने से बच्चे को पेटदर्द या एक्जिमा हो सकता है। यह आमतौर पर दो वर्ष की आयु तक होता है। इसके बाद एलर्जिक राइनाइटिस होता है, जिसमें बहती या बंद नाक और अधिक छींक आती है। ऐसा आमतौर पर तीन से छह साल की उम्र में होता है। लगभग उसी समय या थोड़ा बाद में अस्थमा की समस्या आने लगती है।

बच्चों में अस्थमा बहुत गंभीर और यहाँ तक की जानलेवा भी हो सकता है। इसका कारण यह है कि छोटे बच्चे समस्या बता नहीं पाते और जब तक माता-पिता को पता चलता है तब तक बीमारी काफी बढ़ चुकी होती है। इसमें बारिश के मौसम का असर काफी ज्यादा होता है। बारिश के दौरान बहुत अधिक नमी होती है जिससे फंगस बढ़ती है। जो मरीज फंगस के प्रति संवेदनशील होते हैं, उन्हें इस मौसम में अस्थमा का दौरा पड़ सकता है।

अस्थमा से पीड़ित व्यक्ति के एयर ट्यूब बहुत सेंसिटिव होते हैं। ये तापमान में बदलाव, धूल, परागकण तथा वायरल इंफेक्शन आदि में बहुत तेजी से प्रतिक्रिया करते हैं। इसके चलते पीड़ित को सीने में जकड़न, साँस लेने में कठिनाई, साँस लेने में घरघराहट, सीढ़ी चढ़ने या दौड़ने आदि में साँस फूलने जैसी समस्याएँ होती हैं। कुछ लोगों में खाँसी की शिकायत भी होती है।

अस्थमा ठीक करने के घरेलू उपाय

अदरक और शहद के साथ गर्म पानी श्वसन नली की सूजन को कम करने में मदद करता है। पानी में जीरा, तुलसी डालकर भाप लेने से भी फायदा होता है। रात में तीन अंजीर गला दें। इसके बाद सुबह खाली पेट अंजीर खाने के बाद उसका पानी भी पी जाएँ। इससे बलगम का बनना कम होता है।

अनुलोम विलोम, भस्त्रिका जैसे प्राणायाम दमा रोगियों को डायाफ्रामिक साँस लेने में मदद करते हैं। इसके अलावा यह श्वसन के लिए उपयोगी मांसपेशियों को मजबूत करते हैं। सूर्य नमस्कार से भी बहुत अधिक लाभ मिलता है।

अपने आहार पर ध्यान दें

खाने की जिन भी चीजों से अस्थमा के लक्षण बढ़ते हों, उनसे दूर रहें। इसके अलावा बहुत ठंडा पानी, कोल्ड ड्रिंक, बर्फ, तली हुई चीजें और जंक फूड नुकसान पहुँचाते हैं। कच्चे केले, खट्टे फल से भी नुकसान होता है। हरी पत्तेदार सब्जियों में एंटीऑक्सीडेंट गुण होता है, जो लाभकारी है। इन्हें अपने दैनिक भोजन में अवश्य शामिल करें।

(www.bhaskar.com से साभार)

स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय, योग एवं अनुसंधान केन्द्र, नई दिल्ली

आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग द्वारा रोग निदान

रोगी सुरक्षा एवं उपचार गुणवत्ता हेतु एन.ए.बी.एच.
(National Accreditation Board for Hospitals & Healthcare Providers)
द्वारा प्रमाणित हॉस्पिटल

सुविधाएँ

- 40,000 वर्गफीट में निर्मित विशाल हॉस्पिटल
- सुविधापूर्ण एवं सुव्यवस्थित आवासीय कक्ष
- महिलाओं एवं पुरुषों हेतु अलग–अलग चिकित्सा कक्ष
- 3000 वर्गफीट में निर्मित योगा हॉल
- 2500 वर्गफीट में निर्मित फिटनेस सेन्टर
- फिजियोथैरेपी सेन्टर
- लायब्रेरी
- अत्याधुनिक डाइनिंग हॉल
- फार्मेसी आउटलेट

पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार के चिकित्सकों द्वारा उत्कृष्ट चिकित्सा सेवाएँ, यहाँ संचालित 'पतंजलि वेलनेस सेंटर' में उपलब्ध हैं

रूम चार्जेस (7 दिनों के लिए)

जनरल वार्ड	— 14,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
स्टेंडर्ड रूम	— 21,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
	— 31,000/- (दो व्यक्तियों हेतु)
डीलक्स रूम	— 38,000/- (एक व्यक्ति हेतु)
	— 56,000/- (दो व्यक्तियों हेतु)

विशेष चिकित्सा

गठिया रोग, चर्म रोग / सोरियासिस, पेट रोग, मानसिक रोग, मधुमेह एवं उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, स्त्री एवं पुरुष गुप्त रोग, मोटापा, किडनी रोग, लीवर रोग, जोड़ों का दर्द एवं लकवा

- पंचकर्म, एक्यूप्रेशर, फिजियोथैरेपी एवं औषधियों का शुल्क अलग रहेगा।
- उपरोक्त रूम चार्जेस में नेचुरोपैथी, योगा एवं भोजन सम्मिलित है, जो अग्रिम रूप से देय होगा।
- संबंधित डॉक्टर के निर्देशन पर ही ट्रीटमेंट पैकेज को आगे बढ़ाया जा सकेगा।
- डॉक्टर द्वारा निश्चित उपचार की निर्धारित अवधि से पूर्व हॉस्पिटल से स्वयं ही डिस्चार्ज लेने वालों को किसी भी रूप में जमा किये गए चार्जेस का रिफण्ड नहीं किया जाएगा।
- रोगी के साथ रहने वाले व्यक्ति का शुल्क 1000 रुपये प्रतिदिन अलग से लिया जाएगा।

बुकिंग संबंधी सम्पर्क नंबर – 8287445808, 8287447197 **तथा** 22478881/3
भुगतान संबंधी सम्पर्क नंबर – 8287443203

नरवाना रोड, ब्लॉक–ई, पश्चिम विनोद नगर, आंबेडकर पार्क के पास, नई दिल्ली – 110092
वेबसाइट : www.sppc.in सहित facebook, youtube, instagram पर भी विजिट करें

वात्सल्य प्रकाशन की प्रस्तुतियाँ...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

पूज्या दीदी माँ जी के प्रवचनों की पेन ड्राईव भी उपलब्ध है

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा
29. चतुर्मुखी प्राकृतिक चिकित्सा
30. मसाले भी औषधियाँ हैं

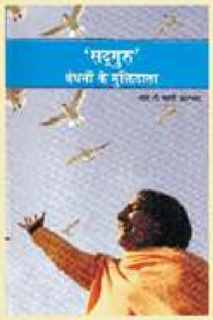

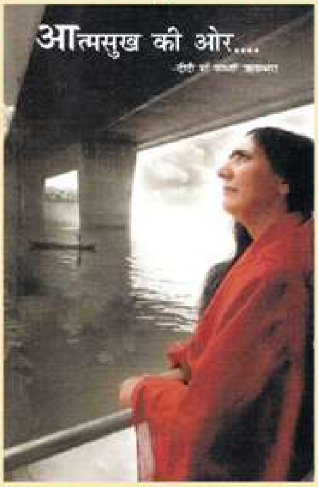

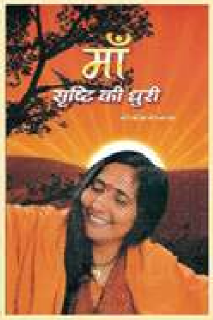

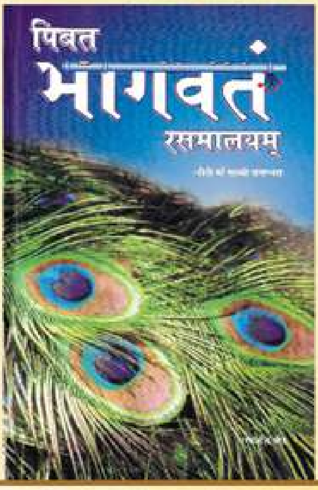

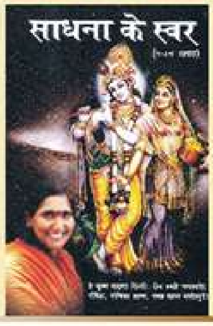

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए 'परमशक्ति पीठ' के नाम से चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट बनवाकर निम्न पते पर भेज सकते हैं। पैकिंग और डाक व्यय आपके द्वारा ही देय होगा।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-103, अग्रसेन आवास, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, नई दिल्ली-110092 दूरभाष सम्पर्क नंबर - 011-22238751, 011-22248774
मोबाइल सम्पर्क नंबर - 99588 85858
ईमेल - info@vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट - प्रेमनगर
वृन्दावन
जिला - मथुरा (उत्तरप्रदेश)-281003

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न आयामों हेतु आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth
Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome
for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	11,00,000/-

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

• For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
• For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ :

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

दान के लिए पेटीएम नंबर :
88268 88001

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : +91-11-222-387-51, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ______________________

व्यवसाय ____________

पता ______________________

______________ पिनकोड ________

सम्पर्क फोन नंबर ____________

ईमेल आई.डी. ______________________

दान राशि (अंकों में) ________ (शब्दों में) ______________

मेरठ (उ.प्र.)

विगत जुलाई को मेरठ के तुलसी हॉस्पिटल का उद्घाटन पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डॉ.अचल गर्ग एवं डॉ. विभूति गर्ग सहित हॉस्पिटल परिवार एवं अनेक गणमान्यजनों ने आयोजन में भाग लिया।

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are :

Mr./Mrs/Ms :..

Occupation :..............................

Address :...

Pin Code :..................

Phone No. :.................. Mobile No. :..................

email :...

Donation Amount (In digits) :......................(In words) ....

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name : Pujab National Bank	Bank name : State Bank Of India
A/c. No. : 1518000101014134	A/c. No. : 10137296689
IFSC Code : PUNB0151800	IFSC Code : SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

गुरुकृपा

-रमेश रंजन त्रिपाठी

श्रीराम के कुलगुरु हैं ऋषि वशिष्ठ। भगवान को गुरु वशिष्ठ ने शिक्षित किया। 'गुरुगृहँ गए पढ़न रघुराई'। महारानी कौशल्या समेत अन्य माताएँ तथा पिता नैसर्गिक एवं प्रथम गुरु हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीराम चरित मानस' में मुनि विश्वामित्र को भी श्रीराम का गुरु कहा है। श्रीराम को सामाजिक, पारिवारिक तथा कुल परंपरा की शिक्षा और संस्कार माता-पिता तथा कुटुंबियों से राजमहल में मिले। औपचारिक शिक्षा गुरु वशिष्ठ से प्राप्त हुई। राघव को महान बलशाली राक्षसों से युद्ध करने के लिए आवश्यक विद्या एवं आयुधों का ज्ञान मुनि विश्वामित्र ने दिया। अच्छे शिष्य अपने जीवन में गुरु से प्राप्त ज्ञान का सदुपयोग किया करते हैं। श्रीराम के मर्यादित आचरण की अन्यतम विशेषता अपने गुरुदेवों से मिली शिक्षा का अत्यंत सुंदर सुपरिणाम है। सभी गुरुजनों से श्रीराम को शास्त्रसम्मत नीतियों एवं आचरण का ज्ञान मिला। रघुनाथ जी ने इस ज्ञान को अपने जीवन में उतारकर सभी मनुष्यों के लिए अनुकरणीय बना दिया।

'मातु पिता गुर प्रभु कै बानी, बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी'। अर्थात् माता, पिता, गुरु और स्वामी की बात को बिना सोच-विचार किए शुभ समझकर मानना चाहिए। श्रीराम ने इस नीति का हरदम पालन किया। गुरु विश्वामित्र की आज्ञा मिलने पर ऋषि गौतम की धर्मपत्नी पूजनीया अहिल्या का उद्धार किया। यद्यपि महाराज जनक ने सीता जी के स्वयंवर में अयोध्या नरेश को निमंत्रित नहीं किया था, फिर भी मुनि विश्वामित्र के कहने पर श्रीराम जनकपुर जाते हैं और रंगभूमि में गुरु के आदेश पर शिव जी के धनुष को न केवल उठाते हैं अपितु प्रत्यंचा चढ़ाते हुए तोड़ भी देते हैं।

मिथिला की 'पुष्पवाटिका' में जानकी जी को देखकर श्रीराम के मन में उनके लिए प्रेम का उदय होता है। राघव अपनी इस 'प्रीत पुरातन' को छिपाते नहीं है, अपितु निश्छल भाव से पहले अनुज लक्ष्मण तथा बाद में गुरुदेव को बताकर 'सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे' का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इतना ही नहीं, कालांतर में सीता जी से विवाह के उपरांत आजीवन एकपत्नीव्रत का दृढ़तापूर्वक पालन करते हैं। शूर्पणखा का प्रसंग और श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण के अनुसार अश्वमेध यज्ञ में सोने की सीता की उपस्थिति राघवेंद्र सरकार की नैतिक एवं चारित्रिक दृढ़ता की पराकाष्ठा का परिचायक है।यह उनकी उत्तम शिक्षा का ही सुफल था।

माता-पिता के वचनों के पालन में श्रीराम प्रभु ने चौदह वर्ष वनवास में गुजारे और अनेक कठिनाइयों का सामना किया। वनवास काल में ऋषि-मुनियों के आश्रम में पहुँचकर आशीर्वाद प्राप्त करना, सीता जी के अपहरण के पश्चात धैर्य धारण किए हुए सुग्रीव से मित्रता, जानकी जी का पता लगाना और लंका पर विजय प्राप्त करने में सबसे अधिक सुशिक्षा की भूमिका थी। परम प्रतापी, सर्वशक्तिमान होने के बावजूद श्रीराम का विनम्र होना 'विद्याम् ददाति विनयम्' का उत्तम उदाहरण है।

श्रीराम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे अपने बुजुर्गों का सम्मान करते हैं। समय-समय पर उनसे सलाह लेते हैं और उनके विचारों को समुचित आदर देते हैं। प्रजा से प्यार करते हैं। वे शत्रु के साथ युद्ध में भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करते। युद्ध को टालने के लिए अंगद को दूत बनाकर भेजते हैं। अपरिहार्य होने पर युद्ध करते हैं। समरांगण में रावण की ओर से सभी तरह के छल-प्रपंच किए जाते हैं। परंतु श्रीराम केवल राक्षसों की मायावी चालों को निष्फल करते हैं, स्वयं किसी छल या माया का सहारा नहीं लेते। श्रीराम धैर्य नहीं खोते। कभी हर्षातिरेक का प्रदर्शन नहीं करते।

तुलसी बाबा ने 'मानस' में गुरुकृपा से भगवान राम को सफलता मिलने का उल्लेख किया है। जब श्रीराम विवाह के उपरांत अयोध्या लौटते हैं तब उन्हें शयन कराते हुए माताएँ ताड़का वध, मारीच और सुबाहु समेत भयानक राक्षसों को मारने, अहल्या उद्धार और धनुष भंग जैसे अमानुषिक कर्मों का उल्लेख करते हुए कहती हैं कि यह सब केवल विश्वामित्र जी की कृपा से संभव हुआ है। (सकल अमानुष करम तुम्हारे, केवल कौसिक कृपाँ सुधारे।)

इसी प्रकार वनवास से लौटकर श्रीराम अपने अनुज लक्ष्मण जी समेत सबसे पहले वामदेव आदि ऋषियों सहित गुरु वशिष्ठ की चरणवंदना करते हैं। तब वशिष्ठ जी द्वारा उनकी कुशल पूछने पर श्रीराम कहते हैं, 'हमरें कुसल तुम्हारिहिं दाया' अर्थात् आप ही की दया में हमारी कुशल है।

श्रीराम प्रभु के भगवत् स्वरूप एवं दिव्य सद्गुणों में उनके गुरुजनों की शिक्षा तथा मार्गदर्शन का महती योगदान है।

डिजिटल मीडिया

डिजिटिलाइजेशन वर्ल्ड के इस समय में 'डिजिटल मीडिया' रोजगार के क्षेत्र में एक आकर्षक और लाभकारी अवसर है। यदि आप भी समाचारों के क्षेत्र में रूचि रखते है और आपको देश विदेश में घट रही घटनाओं के बारे में अच्छी जानकारी है, तो आप भी इस क्षेत्र में अपना अच्छा करियर बना सकते है। इंटरनेट के युग में पत्रकारिता का भविष्य भी वेबसाइट पर आ गया है। अब लोग खबरों को ऑनलाइन पढ़ना या देखना ज्यादा पसंद करते है।

इस मीडिया की सहायता से आप चाहे किसी भी जगह पर हो। अगर आपके पास स्मार्ट फोन और इंटरनेट है तो आप तुरन्त ही पूरी दुनिया की खबरों के बारे में जान सकते है।

डिजिटल पत्रकारिता के लिए योग्यता

इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए सबसे पहले आपको किसी भी स्ट्रीम से बारहवीं की परीक्षा पास करनी होगी उसके बाद आप पत्रकारिता से जुड़ा कोई भी डिग्री डिप्लोमा कोर्स कर सकते है। देश में पत्रकारिता की पढ़ाई करने के लिए बहुत संस्थान है ,लेकिन इन संस्थानों में अभी स्पेशल डिजिटल मीडिया का कोई कोर्स नहीं है। आमतौर पर पत्रकारिता से सभी शिक्षण संस्थान में न्यूज मीडिया, डिजिटल मीडिया, वेब पोर्टल, यूट्यूब, साइबर मीडिया इत्यादि विषयों को भी शामिल गया है।

डिजिटल पत्रकारिता संबंधी कुछ कोर्स

बैचलर डिग्री इन मास कम्यूनिकेशन

पी.जी.डिप्लोमा इन ब्रॉडकास्ट जर्नलिज्म

पी.जी.डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन

पी.जी.डिप्लोमा इन मास मीडिया

एम.ए. इन जर्नलिज्म

बी.एम.सी.एडव्हर्टाइजिंग एंड इवेंट मैनेजमेंट

जर्नलिज्म एंड पब्लिक रिलेशन्स

डिजिटल मीडिया के लिए कुछ महत्वपूर्ण स्किल

अगर आप वेब पोर्टल और डिजिटल मीडिया में अपना एक सफल कॅरियर बनाना चाहते हैं तो आपको पत्रकारिता के साथ-साथ कुछ तकनीकी ज्ञान भी होना आवश्यक है। एक अच्छे पत्रकार को अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा की अच्छी समझ होनी चाहिए ताकि वो दूसरे देशों की खबरों को आसानी से समझ सकें।

डिजिटल मीडिया की नींव इंटरनेट पर टिकी होती है, इसलिए आपको इंटरनेट की अच्छी समझ होनी चाहिए। इंटरनेट पर किसी भी न्यूज या जानकारी को कैसे सर्च किया जाता है इसके बारे में भी आपको पता होना चाहिए। किसी भी खबर के बारे में ये कैसे पता लगाया जाता है कि ये खबर फेक है या नहीं, इसके बारे में भी आपको संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

डिजिटल पत्रकारिता करने के लिए आपको सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग, वीडियो एडिटिंग, फोटो शॉप, एचटीएमएल या सीएसएस का नॉलेज होना भी आवश्यक है।

डिजिटल पत्रकारिता आपकी आवाज का बड़ा महत्व है। इसलिए आपकी वॉइस और कम्युनिकेशन स्किल दोनों श्रेष्ठ होनी चाहिए, ताकि आप किसी समाचार को प्रभावी तरीके से दर्शकों तक पहुँचा सकें।

जॉब के अवसर

वर्तमान समय में चारों ओर सोशल मीडिया की धूम है। भविष्य में इसका क्षेत्र और अधिक बढ़ेगा। अब लोग समाचारों को स्मार्ट फोन में पढ़ना अधिक पसंद करते है, इसीलिए न्यूज चैनल से लेकर अखबार तक सब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर आ चुके है। मीडिया हाउसेस को कंटेंट अपने जमीनी पत्रकारों से मिल जाता है। इसके लिए एक पत्रकार को अपने समाचार ऑनलाइन पत्रकारिता की भाषा में बदलकर अपने वेब पोर्टल पर अपलोड करने पड़ते हैं। ऐसे कामों के लिए आपको कॉपी एडिटर, सीनियर एडिटर, चीफ कॉपी एडिटर और संपादक के पद पर नौकरी आसानी से मिल सकती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपको ग्राफिक डिजाइनिंग, वेब डेव्हलपमेंट, वीडियो एडिटर के रूप में बड़ी संख्या में जॉब के अवसर उपलब्ध है।

वेतन

डिजिटल मीडिया के क्षेत्र में यदि आप तीन से पाँच वर्ष का अनुभव प्राप्त कर लेते है तो आपकी सैलेरी पचास हजार रुपयों या उससे भी अधिक हो सकती है।

(ultimateguider.in से साभार)

श्रीखण्ड महादेव

(कुल्लू, हिमाचल प्रदेश)

समुद्र तल से सत्रह हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है श्रीखण्ड महादेव मन्दिर। यह पवित्र स्थल हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित है। ये भारत के सबसे अधिक दुर्गम क्षेत्रों में बसे हुए तीर्थ स्थानों में से एक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यहाँ भगवान शिवशंकर का निवास माना गया है। हिमाचल प्रदेश की मनोहारी और बर्फीली पर्वत श्रृंखलाओं के बीच यह तीर्थ दुनियाभर के हजारों हिन्दू तीर्थयात्रियों को प्रतिवर्ष श्रावण मास में अपनी पवित्रता की ओर आकर्षित करते हुए उन्हें मार्ग की अनेक कठिनाईयों के बाद भी यहाँ खींच लाता है। प्रतिवर्ष इस यात्रा का आयोजन कुल्लू के जिला प्रशासन एवं श्रीखंड महादेव यात्रा ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। इस दुर्गम क्षेत्र में तीर्थयात्रियों को असामयिक बारिश और बर्फबारी का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। तीर्थयात्रा के समय यहाँ भोजन, पानी और स्लीपिंग बैग मिल जाते हैं परन्तु फिर भी यात्रियों को यहाँ अपनी सभी दैनिक आवश्यकताओं के सामान सहित आना चाहिए। यात्रा के दौरान सुनिश्चित करें कि आपके साथ पानी की बोतलें, ग्लूकोज पाउच, गर्म कपड़े, बरसाती कपड़े, फ्लैशलाइट और सूखे मेवे हों। किसी बीमारी से ग्रस्त लोगों ने यह यात्रा कभी नहीं करनी चाहिए। कुल मिलाकर यह 35 कि.मी. का एक कठिन ट्रेक है जो कि अल्पाइन घास के मैदानों से होते हुए 72 फीट ऊँची उस चट्टान के शिखर तक पहुँचता है जिसे शिवलिंग कहा जाता है। यात्रा को पूरा होने में चार से पाँच दिन लगते हैं। जिला प्रशासन द्वारा तीर्थयात्रियों का यात्रा पूर्व पंजीकरण अनिवार्य है।

लघुकथा

शूर्पणखा से राम बचाएँ

– रमेश रंजन त्रिपाठी

यदि किसी का पाला 'शूर्पणखा' से पड़ जाए, तो वह क्या करे? ऐसा होना आजकल बहुत अचरज की बात नहीं। जब त्रेता युग में 'शूर्पणखाएँ' स्वच्छन्द विचरण किया करती थीं तो, यह तो कलियुग है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' में सभी को 'शूर्पणखा' से बचने के लिए सुन्दर सीख दी है। जब रावण की बहन 'शूर्पणखा' श्रीराम पर डोरे डाल रही होती है, तब भगवान उसे उत्तर देने से पहले सीताजी की ओर देखते हैं। 'सीतहि चितइ कही प्रभु बाता'। यही मूल मंत्र है, 'शूर्पणखा' से सुरक्षित रहने का। 'शूर्पणखा' से सामना होने पर अपनी धर्मपत्नी का स्मरण करें। अर्द्धांगिनी के केवल नाम या चेहरे के विषय में ही न सोचें, अपितु उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का ध्यान करें और याद रखें कि वे वही हैं :

- जो आपके लिए अपने माता-पिता, भाई-बहन, रिश्ते-नाते, घर-बार सबकुछ पीछे छोड़ आई हैं।
- जिन्होंने अपना तन-मन, सर्वस्व आप पर न्यौछावर कर दिया है।
- जिन्होंने अपने जीवन की हर साँस आपके नाम कर दी है।
- जो हर दिन पलक-पाँवड़े बिछाकर आपकी प्रतीक्षा करती हैं।
- जो जीवन-पथ में आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं।
- जिन्होंने आपकी दुनिया को अपना संसार, आपकी खुशी और गम को अपना सुख-दुख बना लिया है।
- जिन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को आपकी महत्वाकांक्षाओं के साथ जोड़ लिया है।
- जो आपको भरा-पूरा परिवार दे रही हैं।
- जो आपके बच्चों की माँ हैं।
- जो आपके कुटुब की दशा और दिशा निर्धारित कर रही हैं।
- और, सबसे बड़ी बात, वे आप पर आँख मूँदकर विश्वास करती है।

यकीन मानिए, जब धर्मपत्नी का स्मरण इन विशेषताओं के साथ किया जाएगा तो कोई 'शूर्पणखा' किसी को परेशान नहीं कर सकेगी।

पूज्य संतों के सानिध्य में

हिन्दू समाज के सामने चुनौतियाँ और उनका समाधान

संगोष्ठी सम्पन्न

वृन्दावन (उ.प्र.)

विगत 9 जुलाई को वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के आनन्द उत्सव सभागार में 'हिन्दू समाज के सामने चुनौतियाँ और उनका समाधान' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। पाकिस्तान में भयंकर अत्याचारों का सामना कर रहे हिन्दू समाज को भारत में लाकर उन्हें भारतीय नागरिकता दिलवाकर यहीं बसाने के लिए प्रयत्नशील संस्था 'नैमित्तेकम्' के इस आयोजन को पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी सहित अनेक आध्यात्मिक विभूतियों का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ।

आयोजन को संस्था के श्री जय आहूजा एवं डॉ. ओमेन्द्र रत्नू सहित जी.एल.ए.विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री नारायणदास अग्रवाल, सुविख्यात कथा वाचक श्री देवकीनन्दन ठाकुर, पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री इन्द्रेश्वरानन्द जी महाराज, पूज्य महन्त श्री फूलडोल बिहारीदास जी महाराज, पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री नवलगिरि जी महाराज, पूज्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री चित्प्रकाशानन्द जी महाराज, आचार्य श्री मृदुलकान्त शास्त्री जी, आचार्य बद्रीश जी, पूज्य स्वामी श्री आदित्यानन्द जी महाराज, सन्त श्री गोपेश बाबा, महन्त श्री मोहिनीशरण दास जी महाराज, श्री रविकान्त गर्ग तथा श्री महेन्द्र प्रताप सिंह सहित अनेक गणमान्यजनों ने अपनी प्रतिष्ठापूर्ण उपस्थिति से सुशोभित किया। इस अवसर पर संस्था 'नैमित्तेकम्' के श्री जय आहूजा ने कहा कि –'पाकिस्तान के हिन्दू आज बड़ा ही पीड़ा भरा जीवन गुजार रहे हैं और भारत आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। वहाँ की हिन्दू बेटियों के साथ जिस तरह बर्बर अत्याचार हो रहा है, वो रोंगटे खड़े कर देने वाला है। अपने अस्तित्व की रक्षा के इस दौर में उनकी सहायता करना हमारा धर्म है। पाकिस्तान के अनेक प्रान्तों में हिन्दू बेटियों के अपहरण बड़ी संख्या में हो रहे हैं, उन पर अत्याचार किया जा रहा है।'

जयपुर के प्रसिद्ध ई.एन.टी.सर्जन एवं पाकिस्तानी अत्याचारों से पीड़ित हिन्दुओं को भारत लाने और बसाने के अभियान से जुड़े डॉ.ओमेन्द्र रत्नू ने कहा कि –'पाकिस्तान में आज भी एक करोड़ हिन्दू भयंकर कष्टदायी जीवन गुजार रहे हैं। वो भारत के हिन्दुओं की ओर मदद की आस लगाए बैठे हैं। हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी मदद करें, उन्हें कैसे भी भारत लाकर बसाएँ और अपनी आजीविका चलाने में उनकी सहायता करें। इसके लिए हमारी संस्था 'धर्मांश फाउंडेशन इंडिया' लगातार काम कर रही है। आप पाकिस्तान में आठ वर्ष की उस हिन्दू बेटी की वेदना को महसूस कीजिए, जेहादी बलात्कारियों की भीड़ द्वारा जिसके कपड़े नोंचे जा रहे हों। सारे पापों का महादेव निस्तारण कर सकते हैं लेकिन एक अबोध बच्ची के शीलभंग के पाप से क्षमा महादेव भी नहीं

पहले चित्र में संस्था 'नैमित्तेकम्' के श्री जय आहूजा एवं दूसरे चित्र में डॉ.ओमेन्द्र रत्नू का अभिनंदन करते हुए परमशक्ति पीठ के महासचिव श्री संजय भैयाजी

देंगे। पाकिस्तान का हिन्दू भारत के हिन्दुओं से पूछता है कि क्या आप श्रीकृष्ण का वो वचन निभाओगे जिसमें वो कहते हैं कि 'जब जब धर्म की हानि होगी, तब तब मैं अवतार लेकर उसकी रक्षा करूंगा।'

आखिर कैसे हमारी बच्ची को कोई हाथ लगा सकता है! ऐसी कुत्सित घटनाओं को रोकने के लिए हम हिन्दुओं को एकजुट होना होगा। हमें पाकिस्तान में हिन्दू बेटियों पर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ खुद ही लड़ना होगा। देश के सौ करोड़ हिन्दुओं में से यदि मात्र एक करोड़ हिन्दू भी उनकी मदद को आगे आएँ तो अगले पाँच वर्षों में हमारा लक्ष्य पूरा हो जाएगा।'

अपने सम्पूर्ण उत्तरदायित्व के साथ आपसे कह रहा हूँ कि ये 'जेहादी माफिया' केवल डराने का प्रपंच करते हैं। चौदह सौ वर्षों तक लगातार हमारे पुरखों ने इनका बैंड बजाया है। भगवान ने चाहा तो आने वाले चौदह सौ वर्षों तक हम बजाते रहेंगे। 'जेहादी शोर' के बीच मैं हिन्दुओं को चेतावनी देते हुए कुछ पंक्तियों के साथ अपनी बात समाप्त करता हूँ :

जलते घर को देखने वालों
फूस का छप्पर आपका है
उसके पीछे तेज हवा है
अगला नंबर आपका है...
उसके कत्ल पर मैं भी चुप था
मेरा नंबर अब आया
मेरे कत्ल पर आप भी चुप हो
अगला नंबर आपका है...

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी, श्री संजय भैयाजी एवं साध्वी सत्यप्रिया जी के साथ संस्था 'निमित्तेकम्' परिवार के सदस्यगण - श्रीमती आनन्द कंवर, डॉ.ओमेन्द्र रत्नू, डॉ.मनीषा रत्नू, श्रीमती निवेदिता रत्नू, श्री विकास राय, श्री कौशलेष राय, श्री जय आहूजा, श्रीमती मीनाक्षी आहूजा, श्री अभिषेक सिंह, श्री रघुवीर, श्री अम्बिकेश रत्नू एवं श्री विशाल।

पूज्या दीदी माँ जी के पावन सानिध्य में

संन्यास दीक्षा

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी से गुरुदीक्षा प्राप्त कर लम्बे समय तक उनके आध्यात्मिक सानिध्य को प्राप्त करते हुए संन्यस्त भाव के साथ धर्म एवं राष्ट्र की सेवा को संकल्पित सात बहनों की संन्यास दीक्षा सम्पन्न हुई। उल्लेखनीय है कि संन्यास दीक्षा के समय दीक्षार्थी शिष्य को अपने हाथों से अपना पिण्डदान करना होता है। साथ ही अनेक अनुष्ठानों को सम्पन्न करते हुए वो अपने सद्गुरुदेव के पावन कर-कमलों से गैरिक वस्त्र प्राप्त कर संन्यासी हो जाता है। पूज्या दीदी माँ जी के श्रीचरणों में अपना सम्पूर्ण जीवन सनातन धर्म के प्रचार-प्रसार को समर्पित करने वाली ये बहनें अब साध्वी सत्यनिष्ठा गिरि, साध्वी सत्यप्रीति गिरि, साध्वी सत्यसमिधा गिरि, साध्वी सत्यसिन्धु गिरि, साध्वी सत्यवाणी गिरि, साध्वी सत्यध्वनि गिरि तथा साध्वी शाम्भवी गिरि के नाम से जानी जाएंगी।

पूज्या दीदी माँ जी के श्रीचरणों में नवसंन्यस्त बहनें

वृक्ष धरती का श्रृंगार हैं

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन.

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन कर कमलों द्वारा वात्सल्य ग्राम में वृक्षारोपण किया गया। उत्तरप्रदेश सरकार के 'वृक्षारोपण अभियान' के अन्तर्गत वात्सल्य ग्राम के द्वारा एक हजार पौधे लगाकर उनके वृक्ष बनने तक उनकी देखभाल का निर्णय लिया गया है। यह आयोजन इसी श्रृंखला का प्रथम चरण था। इस अवर पर दीदी माँ जी ने कहा कि -'उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा वृक्षारोपण का जो आह्वान किया गया है, हम भी उसमें सहयोग प्रदान करते हुए पौधारोपण करेंगे। जिस प्रकार व्यायाम एवं पोषक भोजन से शरीर को पुष्टि मिलती है, परमात्मा के चिंतन से आत्मा का श्रृंगार होता है, ठीक उसी प्रकार धरती का श्रृंगार भी वर्षों से होता है। हमारे पूर्वज प्रकृति के तत्वों को बखूबी समझते थे। वे प्रकृति के पोषण का पूरा ध्यान रखते थे। वो वही वृक्ष लगाते थे जो प्रकृति को पोषण और शक्ति देने वाले होते थे। हमें भी परम्परागत वृक्ष को तैयार करना चाहिए, जो हमारे पर्यावरण को शुद्ध रख सकें। हमें अपनी भावी पीढ़ी को भी इस पुनीत कार्य से जोड़ना होगा ताकि इस समस्त भूमण्डल की जलवायु शुद्ध एवं निर्मल रहे। मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक वृक्ष का साथ रहता है अतः हमें अधिक से अधिक संख्या में वृक्ष लगाना चाहिए।'

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन स्थित समविद गुरुकुलम् सीनियर सेकेण्डरी स्कूल की छात्राएं चित्रकला प्रतियोगिता में भाग लेते हुए

पावन कर कमलों से आशीष पाकर धन्य हुए मेरठवासी

मेरठ (उ.प्र.)

विगत 6 जुलाई को 'श्री अग्रसेन सेवा ट्रस्ट' द्वारा आयोजित 'वैश्य छात्रों, छात्राओं एवं गणमान्यजनों का अभिनन्दन समारोह' पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी पावन सानिध्य एवं मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उनके पावन कर कमलों द्वारा समाज के प्रतिभावान छात्र छात्राओं एवं समाजसेवियों का सम्मान किया गया। समारोह में विशिष्ट अतिथि रहे श्री दीपक सिंघल (पूर्व मुख्य सचिव-उत्तर प्रदेश), श्री एस.के. अग्रवाल (पूर्व न्यायाधीश-उत्तर प्रदेश उच्च न्यायालय), श्री रामकिशन अग्रवाल (चेयरमैन-बसेरा ग्रुप, मथुरा)। संस्था के श्री महेन्द्र गुप्ता, डॉ.रामकुमार गुप्ता, श्री ज्ञानेन्द्र अग्रवाल, श्री सुरेश गुप्ता, श्री अशोक कुमार, श्री ऋषि अग्रवाल एवं श्री गिरीश कुमार बंसल सहित अनेक प्रबुद्धजनों ने अपनी प्रतिष्ठापूर्ण उपस्थिति से आयोजन को सुशोभित किया। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ जी ने अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा आशीवर्चन प्रस्तुत करते हुए समाजजनों को मार्गदर्शित किया।

अतुल्य हैं दीदी माँ के सेवाकार्य

- ज्ञानचन्द गुप्ता
अध्यक्ष - हरियाणा विधानसभा

विगत 27 जुलाई को हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द जी गुप्ता का वात्सल्य ग्राम आगमन हुआ। परमशक्ति पीठ के महासचिव श्री संजय भैयाजी एवं साध्वी सत्यप्रिया जी नेतृत्व में समस्त वात्सल्य परिवार से यथोचित सत्कार प्राप्त करने के पश्चात आपने पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी से आशीर्वाद प्राप्त किया। आपने वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन में संचालित विभिन्न लोकोपयोगी सेवा प्रकल्पों का अवलोकन किया।

इस अवसर पर स्थानीय मीडिया से चर्चा करते हुए श्री ज्ञानचन्द जी ने कहा कि -'परम पूज्य दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के द्वारा संचालित वात्सल्य ग्राम में आकर मुझे एक बहुत सुखद अनुभूति हुई है। वो ममता और स्नेह जो शायद आज अपने घर में ही बच्चों को नहीं मिल पा रहा, वो वात्सल्य ग्राम के बच्चों को प्रदान कर वे दीदी माँ के इस आश्रम में आकर मुझे पहली बार देखने का अवसर मिला। मैं समझता हूँ कि जिस प्रकार से समाज की सेवा, राष्ट्र की सेवा या धर्म की सेवा दीदी माँ पिछले लगभग चालीस वर्षों से करती आ रही हैं और जो सहयोग राम मंदिर के निर्माण में उनका रहा, वह अतुल्य है। मैं दीदी माँ को शत्-शत् नमन करता हूँ। माँ, मौसी, नानी, मामा, भाई और बहन जैसे सभी रिश्तों का दर्शन वात्सल्य ग्राम के इस कुटुम्ब में होता है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जो एक माह की या दो माह की बच्चियाँ यहाँ आई थीं, आज उनमें से कई इंजीनियर, डॉक्टर, आर्किटेक्ट या मैनेजमेण्ट के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाकर देश की सेवा के लिए समर्पित हो रही हैं। देश के श्रेष्ठ परिवारों में उनके ब्याह भी हो रहे हैं। इस पुण्यकार्य के लिए मैं दीदी माँ जी को बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ।'

पूज्या दीदी माँ जी से आशीर्वाद प्राप्त करने के पश्चात वात्सल्य ग्राम के विभिन्न सेवा प्रकल्पों का अवलोकन करते हुए हरियाणा विधानसभा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्द जी गुप्ता

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के आगामी कार्यक्रम

संयुक्त राज्य अमेरिका के अपने आध्यात्मिक प्रवास में पूज्या दीदी माँ जी अपने प्रवचनों से अमेरिकावासियों को लाभान्वित करेंगी

01 सितम्बर 2023 – नई दिल्ली विमानतल से न्यूजर्सी के लिए प्रस्थान

02 से 05 सितम्बर 2023 – न्यूजर्सी में

06 से 10 सितम्बर 2023 – न्यूयॉर्क में

11 से 13 सितम्बर 2023 – शिकागो में

14 से 17 सितम्बर 2023 – फ्लोरिडा में

18 से 21 सितम्बर 2023 – टेक्सास में

22 से 24 सितम्बर 2023 – लॉस एंजिल्स में

25 सितम्बर 2023 – लॉस एंजिल्स विमानतल से नई दिल्ली के लिए प्रस्थान

श्रीमद् दयानन्द कन्या गुरुकुल महाविद्यालय, चोटीपुरा में छात्राओं की योगासन कला का दर्शन करते हुए पूज्या दीदी माँ जी एवं पतंजलि पीठ, हरिद्वार के आचार्य बालकृष्ण जी

टेलीविज़न पर

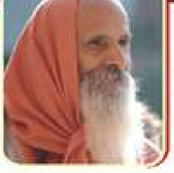

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष

स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज की

परम वाणी

दिशा TV – प्रतिदिन रात्रि 9:30 बजे

Vedic – प्रातः 9:30 बजे सोमवार, बुधवार एवं गुरुवार

परम पूज्या

दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की

वात्सल्य वाणी

प्रतिदिन सायं 7:20 बजे

आस्था – प्रतिदिन प्रातः 8:00 बजे

सत्संग – प्रतिदिन रात्रि 10:30 बजे

ओमप्रकाश गोयनका
9810011579, 8285011579

Rasila

Mango Extravaganza

Alphonso Mango Jalebi
Alphonso Mango Burfi
Alphonso Mango Sandwich

Rasila Mango Bar EXPORT QUALITY

LNG MANGO BAR

दुर्गा लाजवाब आम पापड़

ONE

Dilbahar's

DURGA TRADERS

IMPORTERS & EXPORTERS

SPECIALIST IN : AAMPAPAR & DIGESTIVE CHURAN GOLI

188, Tilak Bazar, Delhi-110006
Tel.: 011 41509286, 08920041961, 09312872320, 09810017579
E-mail : durgatraders188@hotmail.com

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2022-24
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

SAMVID GURUKULAM SR.SEC. SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)

Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls

Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org